HUSNE AKHLAQ (HINDI)

हुस्ने अख़्लाक़ के फ़ज़ाइल पर
मुश्तमिल 200 मुस्तनद अहादीस का मजमूआ

مَكَارِمُ الْاَخْلَاق

तर्जमा बनाम

हुस्ने अख़्लाक़

-: मुअल्लिफ़ :-

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى

(अल मुतवफ़्फ़ा 360 हि.)

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

हुस्ने अख़्लाक़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "उर्दू" ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का "**हिन्दी**" रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ٹ	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ع
य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
◌ُ = ◌ُ	◌ُ = ◌ُ	◌ِ = ◌ِ	◌َ = ◌َ	◌ِی = ◌ِی	◌ُو = ◌ُو	آ = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

हुस्ने अख़्लाक़ के फ़ज़ाइल
पर मुश्तमिल 200 मुस्तनद अहादीस का मजमूआ़

مَكَارِمُ الْاَخْلَاق

तर्जमा बनाम

हुस्ने अख़्लाक़

-: मुअल्लिफ़ :-
ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम
अबू क़ासिम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى
(अल मुतवफ़्फ़ा 360 हि.)

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

नाम किताब : مَكَارِمُ الْاَخْلَاق

तर्जमा बनाम : हुस्ने अख़्लाक़

मुअल्लिफ़ : हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى

मुतर्जिमीन : मदनी उ़लमा (शो 'बए तराजिमे कुतुब)

सिने त़बाअ़त : रजबुल मुरज्जब 1436 हि. ब मुत़ाबिक़ मई 2015 ई.

क़ीमत : रूपै

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 6 जुल हिज्जतिल ह़राम, 1430 हि. **ह़वाला :** 165

الحمد لله رب العلمين و الصلوة و السلام على سيد المرسلين وعلى اله و اصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब "مَكَارِمُ الْاَخْلَاق" के उर्दू तर्जमे

"हुस्ने अख़्लाक़"

(मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहिम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
24-11-2009

E-mail : ilmiapak@gmail.com

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़ह़ा	मज़ामीन	सफ़ह़ा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	3	मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही की फ़ज़ीलत	36
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	4	दिल की पाकीज़गी और मुसलमानों के कीने से बचने की फ़ज़ीलत	37
पहले इसे पढ़ लीजिये	6		
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	10	लोगों में सुल्ह़ कराने की फ़ज़ीलत	40
तिलावते क़ुरआने मजीद, ज़िक्रुल्लाह की कसरत, ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना, मसाकीन से महब्बत और इन की हम नशीनी के फ़ज़ाइल	14	अदाएगिये हुक़ूक़ की फ़ज़ीलत	41
		मज़लूम की मदद करने की फ़ज़ीलत	41
		ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकने का बयान	42
		नादान को रोकने का बयान	42
हुस्ने अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत	15	मुसलमानों की मदद और इन की ज़रूरत पूरी करने की फ़ज़ीलत	43
नर्म मिज़ाजी, ख़ुश अख़्लाक़ी और आ़जिज़ी की फ़ज़ीलत	19	किसी की परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत	47
लोगों से ख़न्दा पेशानी से मिलने की फ़ज़ीलत	20	कमज़ोरों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत	49
मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराने की फ़ज़ीलत	21	यतीमों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत	51
नर्मी और बुर्दबारी की फ़ज़ीलत	22	लावारिस बच्चों की तर्बिय्यत और इन के बड़े होने तक इन पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत	55
सब्र व सख़ावत की फ़ज़ीलत	24		
ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद पर क़ाबू पाने की फ़ज़ीलत	26	हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत	55
रह़्म और नर्म दिली की फ़ज़ीलत	27	अच्छे आ'माल करने की फ़ज़ीलत	59
ग़ुस्सा पी जाने की फ़ज़ीलत	30	मुसलमान पर ज़ुल्म करने की मज़म्मत	60
लोगों से दर गुज़र करने की फ़ज़ीलत	32	मुसलमान भाई की जाइज़ सिफ़ारिश	

www.dawateislami.net

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
करने की फ़ज़ीलत	62	उ़लमा के लिये मजलिस कुशादा करने की फ़ज़ीलत	69
मुसलमान की इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ और इस की मदद करने की फ़ज़ीलत	64	मुसलमान भाई को तक्या पेश करने की फ़ज़ीलत	70
लोगों से मह़ब्बत करने की फ़ज़ीलत	66	खाना खिलाने की फ़ज़ीलत	71
राहे खुदा के लश्करों की मदद करने की फ़ज़ीलत	66	मुसलमान भाई को लिबास पहनाने की फ़ज़ीलत	86
ह़ाजी की मदद करने और रोज़ा इफ़्तार कराने की फ़ज़ीलत	67	हमसाए के हुक़ूक़ का बयान	87
छोटों पर शफ़्क़त, बड़ों की इ़ज़्ज़त और उ़लमा का एह़तिराम करने की फ़ज़ीलत	68	माख़ज़ो मराजेअ़	91

....नेकियों का ज़ख़ीरा....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये "**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से "**मदनी इन्आ़मात**" नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये । और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर खूब खूब सुन्नतों की बहारें लूटिये । **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये "**नेकियों का ज़ख़ीरा**" इकठ्ठा करें । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर "**मदनी इनक़िलाब** " बरपा होता देखेंगे ।

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

"अच्छे अख़्लाक़ अपनाओ" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:۵۹۴۲،ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :

﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴿5﴾ क़ुरआनी आयात और ﴿6﴾ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴿7﴾ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿8﴾ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿9﴾ जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿10﴾ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴿11﴾ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर <u>अन्डर लाइन</u> करूंगा ﴿12﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴿13﴾ इस ह़दीसे पाक "تَھَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطاامام مالک،ج۲،ص۴۰۷،الحدیث:۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴿14﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

एक शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **हुस्ने अख़्लाक़** के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۱۹۹﴾

(پ۹،الاعراف:۱۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ महबूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो ।*

फिर इरशाद फ़रमाया : "**हुस्ने ख़ुल्क़** येह है कि तुम क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने वाले से सिलए रेह़मी करो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो ।"[(1)]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने, ख़ूब भलाई करने और किसी को तक्लीफ़ न देने का नाम **हुस्ने अख़्लाक़** हैं ।[(2)]

प्यारे और मोह़तरम इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी का एक और मक़्सद येह भी है कि लोगों के अख़्लाक़ व मुआ़मलात को दुरुस्त करें । उन के अन्दर से बुरे अख़्लाक़ की जड़ें उखाड़ें और

---

(1) ......احیاء علوم الدین، کتاب ریاضۃ النفس......الخ،بیان فضیلۃ حسن الخلق......الخ، ج۳،ص ٦١.

(2) ......سنن الترمذی، کتاب البر والصلہ،باب ماجاء فی حسن الخلق،الحدیث:۲۰۱۲، ج۳،ص ٤٠٤.

www.dawateislami.net

इन की जगह बेहतरीन अख़्लाक़ पैदा करें । चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने क़ौल व अ़मल से तमाम अच्छे अख़्लाक़ की फ़ेहरिस्त मुरत्तब फ़रमाई और पूरी ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के तमाम शो'बों पर इसे नाफ़िज़ किया और हर त़रह़ के ह़ालात में इन पर कारबन्द रहने की हिदायत की ।

हुस्ने अख़्लाक़ की ने'मत सिर्फ़ सआ़दत मन्दों का ह़िस्सा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ासुल ख़ास इन्आ़म है और **हुस्ने अख़्लाक़** में हुस्न ही हुस्न है जब कि बद अख़्लाक़ी में कराहिय्यत ही कराहिय्यत है । किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

ज़ेरे नज़र रिसाला "**हुस्ने अख़्लाक़**" दुन्याए इस्लाम के अ़ज़ीम मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي की शाहकार तालीफ "مَكَارِمُ الْاَخْلَاق" का तर्जमा है । जिस में सय्यिदुना इमाम त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي ने अख़्लाक़ के मुख़्तलिफ़ शो'बों के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका जम्अ़ फ़रमाई हैं । उम्मीदे वासिक़ है कि येह रिसाला शबो रोज़ इनफ़िरादी कोशिश में मसरूफ़ रहने वाले इस्लामी भाइयों के लिये बेह़द मुफ़ीद साबित होगा اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ । लिहाज़ा **हुस्ने अख़्लाक़** अपनाने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी पर इस्तिक़ामत पाने और "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" का मुक़द्दस जज़्बा उजागर करने के लिये ख़ुद भी इस रिसाले का मुत़ालआ़ कीजिये और ह़ल्क़े इस्तित़ाअ़त

www.dawateislami.net

मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के दूसरों को बतौ़रे तोह़फ़ा पेश कीजिये। इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की इ़नायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं इन में हमारी कोताह फ़ह्मी का दख़्ल है।

तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उ़मूर का ख़ुसूसी त़ौर पर ख़याल रखा गया है :

- .....सलीस और बा मुह़ावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।
- .....आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन **''कन्ज़ुल ईमान''** से लिया गया है।
- .....आयाते मुबारका के ह़वाले नीज़ ह़त्तल मक़्दूर अह़ादीस व अक़्वाल वग़ैरा की तख़ारीज का भी एहतिमाम किया गया है।
- .....बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद व ज़रूरी ह़वाशी का इलतिज़ाम किया गया है।
- .....मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाने की सई भी की गई है।
- .....मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन या'नी ब्रेकेट (.....) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।
- .....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों में** सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो 'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

फ़ज़ाइले क़ुरआने करीम

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

"येह क़ुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ उस की ज़ियाफ़त क़बूल करो। बेशक येह क़ुरआने मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत़ रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अ़मल करे उस के लिये नजात है। येह ह़क़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े। इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कसरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहता है)। तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर ह़र्फ़ की तिलावत पर दस नेकियां अ़ता फ़रमाएगा। मैं नहीं कहता कि "الٓمٓ" एक ह़र्फ़ है बल्कि "الف" एक ह़र्फ़ "لام" एक ह़र्फ़ और "میم" एक ह़र्फ़ है।" (المستدرك،الحديث:٢٠٨٤،ج٢،ص٢٥٦)

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नामे नामी इस्मे गिरामी सुलैमान बिन अह़मद बिन अय्यूब मुत़ीर लख़्मी त़बरानी है। कुन्यत अबू क़ासिम है और इमाम त़बरानी के नाम से मश्हूर हैं।

बिलादते बा सआ़दत :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सफ़रुल मुज़फ़्फ़र **260** हि. में त़बरिया में पैदा हुवे।

इल्मी ज़िन्दगी :

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बचपन ही से इल्म ह़ासिल करना शुरूअ़ फ़रमा दिया था। चुनान्चे, त़बरिया में ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मसऊ़द मक़्दसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से अह़ादीस की समाअ़त की, उस वक़्त उ़म्र शरीफ़ **13** साल थी। फिर मुल्के शाम मुन्तक़िल हो गए जहां आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इल्मे ह़दीस के माहिर व निक़ाद मुह़द्दिसीन से समाअ़ते ह़दीस की, फिर **280** हि. में मिस्र की जानिब सफ़र इख़्तियार फ़रमाया और **282** हि. में यमन। **283** हि. में मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की जानिब सफ़र किया। फिर मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से होते हुवे दोबारा यमन तशरीफ़ ले आए। **285** हि. में मिस्र लौट आए और **287** हि. में इराक़ का सफ़र फ़रमाया। इन तमाम सफ़रों के दौरान कुछ वक़्त अइम्मए ह़दीस से ह़दीस की समाअ़त का शरफ़ ह़ासिल किया फिर फ़ारस मुन्तक़िल हो गए और ता दमे वफ़ात वहीं क़ियाम पज़ीर रहे।

www.dawateislami.net

असातिज़ए किराम :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى "तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़" में फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के असातिज़ा की ता'दाद एक हज़ार से ज़ाइद है।" हज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के शागिर्दे रशीद हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नईम अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى "हिल्यतुल औलिया" में फ़रमाते हैं कि "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बे शुमार अकाबिर उ़लमा से अहादीस रिवायत की हैं। चन्द मश्हूर शुयूख़ के अस्माए गिरामी येह हैं :

(1).....हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बग़वी (2).....हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम कशी (3).....हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रमी (4).....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़म्बल (5).....हज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम दबेरी (6).....हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन या'क़ूब क़ाज़ी और (7).....हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन उ़स्मान बिन अबी शैबा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن

तलामिज़ा :

बे शुमार तिश्नगाने इ़ल्म ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बह़रे इ़ल्म से अपनी प्यास बुझाई जिन में से चन्द के अस्माए गिरामी येह हैं : (1).....हज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अह़मद बिन मूसा बिन मरदविया (2).....हज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिन अह़मद बिन अह़मद जारवदी (3).....हज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ बिन मुह़म्मद बिन यह़्या अस्बहानी और (4).....हज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिन अबू अ़ली अह़मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान

www.dawateislami.net

हम्ज़ानी ज़कवानी رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن । नीज़ आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه के बा'ज़ शुयूख़ ने भी आप से रिवायात ली हैं ।

तस्नीफ़ व तालीफ़ :

आप رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه ने कसीर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई हैं जिन में से चन्द के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (1).....اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر (2)..... اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط (3)..... اَلْمُعْجَمُ الصَّغِيْر (4)....(ज़ेरे नज़र रिसाला) مَكَارِمُ الْاَخْلَاق (5).....كِتَابُ الْاَوَائِل (6)..... كِتَابُ الْاَحَادِيْثِ الطِّوَال (7).....كِتَابُ الدُّعَاء

ता'रीफ़ी कलिमात :

हज़रते सय्यिदुना इमाम समआनी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى "अल अन्साब" में फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम तबरानी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِى अपने ज़माने के हाफ़िज़ुल हदीस थे । इल्मे हदीस के हुसूल के लिये मुख़्तलिफ़ मुमालिक का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया और बेशुमार शुयूख़ से मुलाक़ात की और हुफ़्फ़ाज़े हदीस से मुज़ाकरा किया । फिर उम्र के आख़िरी अय्याम में अस्बहान में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई और कसीर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं ।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने असाकिर رَحۡمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡه "तारीख़े दिमश्क़" में फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम तबरानी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِى कसीर अहादीस हिफ़्ज़ करने और अहादीस के हुसूल के लिये सफ़र करने वालों में से एक हैं ।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने इम्माद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡجَوَاد "शज़रातुज़्ज़हब" में फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इमाम तबरानी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِى क़ाबिले ए'तिमाद और सच्चे मुहद्दिस थे । क़वी हाफ़िज़े के मालिक और अ़लल व रिजाले हदीस और अबवाब की कामिल बसीरत रखने वाले थे ।

www.dawateislami.net

विसाल :

इल्मो अ़मल का येह ह़सीन पैकर इल्म के मोती लूटाते और इल्म के प्यासों को सैराब करते हुवे माहे जुल क़ा'दा **360** हि. में दारे फ़ानी से दारे बक़ा की जानिब कूच कर गया।

(اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّآاِلَيْهِ رَاجِعُوْن)

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन)

ह़दीसे क़ुदसी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **54** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल"** सफ़ह़ा **51** ता **52** पर है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

ऐ इब्ने आदम ! जिस ने हंस हंस कर गुनाह किये मैं उसे रुला रुला कर जहन्नम में डालूंगा और जो मेरे ख़ौफ़ से रोता रहा मैं उसे ख़ुश कर के जन्नत में दाख़िल करूंगा।

ऐ इब्ने आदम !

- ...कितने ग़नी ऐसे हैं जो रोज़े ह़िसाब मोह़ताजी व मुफ़्लिसी की तमन्ना करेंगे ?
- ...कितने बे रह़्म ऐसे हैं जिन्हें मौत ज़लीलो रुस्वा कर देगी ?
- ...कितनी शीरीं चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें मौत तल्ख़ कर देगी ?
- ...ने'मतों पर कितनी ख़ुशियां ऐसी हैं कि जिन्हें मौत गदला कर देगी ?
- ...कितनी ख़ुशियां ऐसी हैं जो अपने बा'द त़वील ग़म लाएंगी ?

(مجموعة رسائل الامام الغزالی،المواعظ فی الاحادیث القدسیة،ص۵۷۷)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

तिलावते क़ुरआने मजीद, ज़िक्रुल्लाह की कसरत, ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना, मसाकीन से महब्बत और इन की हम नशीनी के फ़ज़ाइल

﴾1﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें ख़ौफ़े ख़ुदा की नसीहत करता हूं । बेशक येह तुम्हारे दीन की अस्ल है ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "और नसीहत फ़रमाइये ।" इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआने मजीद की तिलावत और ज़िक्रुल्लाह कसरत से किया करो कि येह तुम्हारे लिये आस्मानों और ज़मीन में नूर होंगे ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ और नसीहत फ़रमाइये ।" इरशाद फ़रमाया : "जिहाद को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि येह मेरी उम्मत की रहबानिय्यत(1) है ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ और नसीहत फ़रमाइये ।" इरशाद फ़रमाया : "कम हंसा करो कि ज़ियादा हंसना दिलों को मुर्दा और चेहरे को बे नूर कर देता है ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मज़ीद नसीहत फ़रमाइये ।" इरशाद फ़रमाया : "अच्छी बात के इलावा ख़ामोश ही रहो कि ख़ामोशी तुम्हारे शैतान से ढाल और दीनी कामों में तुम्हारी मददगार है ।"

---

(1).....इबादत व रियाज़त में मुबालग़ा करने और लोगों से दूर रहने को रहबानिय्यत कहते हैं । (تفسیر بیضاوی، پ۲۷، تحت الآیۃ:۲۷، ج۵، ص۳۰۵)

www.dawateislami.net

मैं ने अ़र्ज़ की : "कुछ और नसीह़त फ़रमाइये।" इरशाद फ़रमाया : "(दुन्यावी मुआ़मलात में) अपने से अदना को देखो आ'ला की त़रफ़ मत देखो क्यूंकि येह अ़मल इस से बेहतर है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत को ह़क़ीर जानने लगो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ और नसीह़त फ़रमाइये।" इरशाद फ़रमाया : "मसाकीन से मह़ब्बत करो और उन की सोह़बत इख़्तियार करो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।" इरशाद फ़रमाया : "ह़क़ बात कहो अगर्चे कड़वी हो।" मैं ने अ़र्ज़ की : "कुछ और भी इरशाद फ़रमाइये।" इरशाद फ़रमाया : "रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़ो अगर्चे वोह तुम से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करें।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और नसीह़त फ़रमाइये।" इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी की मलामत से ख़ौफ़ ज़्यादा न होना।" मैं ने अ़र्ज़ की : "और नसीह़त फ़रमाइये।" इरशाद फ़रमाया : "लोगों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द करते हो।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर मारा और इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! तदबीर जैसी कोई अ़क़्ल मन्दी नहीं, गुनाहों से बचने जैसी कोई परहेज़गारी नहीं और **हुस्ने अख़्लाक़** जैसी कोई शराफ़त नहीं।"[1]

हुस्ने अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत

﴿2﴾.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि "हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे

---

1 .....الترغيب والترهيب، كتاب القضا، باب الترهيب من الظلم ودعاء المظلوم، الحديث: ٢٤، ج٣، ص١٣١.

www.dawateislami.net

मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक बन्दा हुस्ने अख़्लाक़ के ज़रीए दिन में रोज़ा रखने और रात में क़ियाम करने वालों के दरजे को पा लेता है और कभी बन्दे को मुतकब्बिर व सरकश लिख दिया जाता है हालांकि वोह अपने घर वालों के इलावा किसी का भी मालिक नहीं होता।"(1)

﴿3﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बन्दा हुस्ने अख़्लाक़ की वजह से तहज्जुद गुज़ार और सख़्त गर्मी में रोज़े के सबब प्यासा रहने वाले के दरजे को पा लेता है।"(2)

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मीज़ाने अमल में हुस्ने अख़्लाक़ से ज़ियादा वज़नी कोई चीज़ नहीं।"(3)

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें तुम में सब से बेहतर शख़्स के बारे में ख़बर न दूं?" हम ने अर्ज़ की : "क्यूं नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "वोह जो तुम में से अच्छे अख़्लाक़ वाला है।"(4)

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबियों के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद

1 .....المعجم الاوسط،الحديث:٦٢٧٣_٦٢٨٣،ج٤،ص٣٦٩_٣٧٢.

2 .....الاستذكار للقرطبي،باب ماجاء فى حسن الخلق،الحديث:١٦٧٢،ج٨،ص٢٧٩.

3 .....سنن ابى داؤد،باب فى حسن الخلق،الحديث:٤٧٩٩،ج٤،ص٣٣٢.

4 .....الترغيب والترهيب،كتاب الادب،باب الترغيب فى الخلق الحسن.....الخ، الحديث:٤٠٧١،ج٣،ص٣٣٠.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "बरोज़े क़ियामत तुम में से मुझे ज़ियादा महबूब और मेरी मजलिस में ज़ियादा क़रीब वोह लोग होंगे जो अच्छे अख़्लाक़ वाले और आजिज़ी इख़्तियार करने वाले होंगे, वोह लोगों से और लोग उन से महब्बत करते हैं और तुम में से मेरे नज़दीक नापसन्दीदा और मेरी मजलिस में मुझ से ज़ियादा दूर वोह लोग होंगे जो बहुत ज़ियादा बातें करने वाले, बक बक करने वाले और तकब्बुर करने वाले होंगे।"(1)

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं ने बन्दों को अपने इ़ल्म से पैदा किया। पस जिस से मैं भलाई का इरादा करता हूं उसे अच्छे अख़्लाक़ अ़ता कर देता हूं और जिस से बुराई का इरादा करता हूं उसे बुरे अख़्लाक़ दे देता हूं।"(2)

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुसलमानों में से सब से ज़ियादा अच्छा वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से ज़ियादा अच्छे हैं।"(3)

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، الحدیث: ۲۰۲۵، ج۳، ص۴۰۹۔
الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الخلق الحسن.....الخ، الحدیث: ۴۰۸۰، ج۳، ص۳۳۲.

2 .....جامع الاحادیث، حرف القاف مع الالف، الحدیث: ۱۵۱۲۹، ج۵، ص۳۲۵.

3 .....المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث جابر بن سمرہ، الحدیث: ۲۰۸۷۴، ج۷، ص۴۱۰.

www.dawateislami.net

ने इरशाद फ़रमाया : कामिल मोमिन वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से ज़ियादा अच्छे हैं।"(1)

﴾10﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस बन्दे के ख़ल्क़ और ख़ुलुक़ (या'नी सूरत और सीरत) को अच्छा बनाया उसे आग न खाएगी।"(2)

﴾11﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अच्छे अख़्लाक़ गुनाहों को इस त़रह़ पिघला देते है जिस त़रह़ सूरज की ह़रारत बर्फ़ को पिघला देती है।"(3)

﴾12﴿.....हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्सान को सब से अच्छी चीज़ कौन सी अ़त़ा फ़रमाई गई ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इन्सान को हुस्ने अख़्लाक़ से ज़ियादा अच्छी कोई चीज़ अ़त़ा नहीं की गई।"(4)

﴾13﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......سنن ابی داؤد، کتاب السنہ، باب الدلیل علی زیادۃ الایمان......الخ، الحدیث: ٤٦٨٢، ج٤، ص٢٩٠.

2 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ٨٠٣٨، ج٦، ص٢٤٩.

3 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ٨٠٣٦، ج٦، ص٢٤٧.

4 ......المعجم الکبیر، الحدیث: ٤٦٣، ج١، ص١٧٩.

www.dawateislami.net

मुझे नसीहत फ़रमाई कि "जहां भी रहो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और गुनाह सरज़द हो जाए तो फ़ौरन नेकी कर लिया करो कि येह गुनाह को मिटा देगी और लोगों से अच्छे अख़्लाक़ से पेश आओ।"(1)

नर्म मिज़ाजी, ख़ुश अख़्लाक़ी और आ़जिज़ी की फ़ज़ीलत

﴾14﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें उस शख़्स के बारे में न बताऊं जिस पर जहन्नम की आग ह़राम है ? जो नर्म त़बीअ़त, नर्म ज़बान, लोगों से दरगुज़र करने और ह़ाजत पूरी करने वाला हो।"(2)

﴾15﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन इतना नर्म त़बीअ़त, नर्म ज़बान वाला होता है कि उस की नर्मी की वजह से लोग उसे अह़मक़ ख़याल करते हैं।"(3)

﴾16﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इ़रबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन नकील वाले ऊंट की त़रह़ होता है कि अगर उसे बांध दिया जाए तो ठहर जाता है और अगर चलाया जाए तो चल पड़ता है और अगर किसी पथरीली जगह पर बिठाया जाए तो बैठ जाता है।"(4)

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی معاشرة الناس، الحدیث: ۱۹۹٤، ج۳، ص۳۹۷.

2 .....المعجم الاوسط، الحدیث: ۸۳۷، ج۱، ص۲٤٤.

3 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۸۱۲۷، ج٦، ص۲۷۲.

4 .....سنن ابن ماجه، کتاب السنه، باب اتباع سنة خلفاء.....الخ، الحدیث: ٤۳، ج۱، ص۳۲۔ تفسیر روح البیان، الفرقان، تحت الآیه: ٦۳، ج٦، ص۲٤۰، بدون وان سیق انساق.

www.dawateislami.net

﴾17﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जिस ने बिग़ैर नक़्स व ऐ़ब के आ़जिज़ी की और ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो उ़लमाए फ़िक़्ह व हि़क्मत से मेल जोल रखे और ज़लील और गुनहगारों की सोह़बत से दूर रहे। ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो अपना ज़ाइद माल राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दे और फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बाज़ रहे। ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो मेरी सुन्नत को अपनाए हुवे हो और सुन्नत को छोड़ कर बिदअ़त इख़्तियार न करे।"(1)

लोगों से ख़न्दा पेशानी से मिलने की फ़ज़ीलत

﴾18﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम लोगों को अपने अमवाल से ख़ुश नहीं कर सकते लेकिन तुम्हारी ख़न्दा पेशानी और ख़ुश अख़्लाक़ी उन्हें ख़ुश कर सकती हैं।"(2)

﴾19﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल तरीन सदक़ा येह है कि तुम अपने बरतन से पानी अपने भाई के बरतन में उंडेल दो और उस से ख़न्दा पेशानी से मिलो।"(3)

---

1 ......شعب الایمان للبیھقی، باب فی الزھد وقصر العمل، الحدیث:١٠٥٦٣، ج٧، ص ٣٥٥، بتغیرٍ قلیلٍ.

2 ......المستدرك للحاكم، كتاب العلم، الحدیث:٤٣٥، ج١، ص٣٢٩.

3 ......سنن الترمذی، كتاب البر والصلة عن رسول اللّٰه، باب ماجاء فی طلاقة الوجه......الخ، الحدیث:١٩٧٧، ج٣، ص٣٩١، مفهومًا.

www.dawateislami.net

मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराने की फ़ज़ीलत

﴾20﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअन रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहत क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारा अपने डोल से अपने भाई का डोल भरना सदक़ा है। तुम्हारा नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना सदक़ा है। तुम्हारा अपने मुसलमान भाई के लिये मुस्कुराना सदक़ा है और तुम्हारा किसी भटके हुवे को रास्ता बताना भी सदक़ा है।"(1)

﴾21﴿.....हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाती हैं कि वोह दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराया करते थे। मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया कि मैं ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराते रहते थे।"(2)

﴾22﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह्यी नाज़िल होती तो मैं कहता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ौम को डर सुनाने वाले हैं और जब वह्यी नाज़िल न होती तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा मुस्कुराने वाले और अच्छे अख़्लाक़ वाले होते थे।(3)

---

1 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی الزکاۃ،الحدیث:۳۳۲۸،ج۳،ص۲۰٤.

2 .....تاریخ مدینہ دمشق لابن عساکر،الرقم٥٤٦٤عویمربن زیدبن قیس،ج٤٧،ص١٨٧.

3 .....الکامل فی ضعفاء الرجال،الرقم١٦٦٣\٢٤محمدبن عبدالرحمن بن ابی لیلی، ج٧،ص٣٩٤،بتغیرٍقلیلٍ.

www.dawateislami.net

नर्मी और बुर्दबारी की फ़ज़ीलत

﴾23﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नर्मी फ़रमाने वाला है और नर्मी को पसन्द फ़रमाता है और नर्मी पर वोह कुछ अ़ता फ़रमाता है जो सख़्ती पर अ़ता नहीं फ़रमाता।"(1)

﴾24﴿.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर मुआमले में नर्मी को ही पसन्द फ़रमाता है।"(2)

﴾25﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नर्मी जिस चीज़ में होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है।"(3)

﴾26﴿.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी घराने से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उन (के दिलों) में उल्फ़त व नर्मी पैदा फ़रमा देता है।"(4)

﴾27﴿.....हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الادب،باب فی الرفق،الحدیث:٤٨٠٧،ج٤،ص٣٣٤.

2 .....صحیح البخاری، کتاب الادب،باب الرفق فی الامر کله،الحدیث:٦٠٢٤،ج٤،ص١٠٦.

3 .....مسند البزار،مسندابی همزه انس بن مالك،الحدیث:٧٠٠٢،ج٢،ص٣٢٩.

4 .....المسندللامام احمدبن حنبل،مسندعائشه،الحدیث:٢٤٤٨١،ج٩،ص٣٤٥.

www.dawateislami.net

ने इरशाद फ़रमाया : "इत्मीनान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से और जल्द बाज़ी शैत़ान की त़रफ़ से है।"(1)

﴿28﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी की इ़ज़्ज़त उस का दीन, मुरव्वत (مُرُوَّت) उस की अ़क़्ल और उस की शराफ़त उस का अख़्लाक़ है।"(2)

﴿29﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अशज अ़सरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है वोह बुर्दबारी और इत्मीनान हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या वोह ख़स्लतें मैं ने ख़ुद अपने अन्दर पैदा कीं हैं या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इन पर फ़ित्रतन पैदा फ़रमाया है?" इरशाद फ़रमाया : "नहीं बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी फ़ित्रत इन्हीं दो ख़स्लतों पर रखी है।" फिर मैं ने कहा : "तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने मेरी फ़ित्रत उन दो ख़स्लतों पर रखी जिन से वोह और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم राज़ी हैं।"(3)

﴿30﴾.....ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی الرفق، الحدیث: ۲۰۱۹، ج۳، ص۴۰۷.

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هریره، الحدیث: ۸۷۸۲، ج۳، ص۲۹۲.

3 .....السنن الکبری للبیهقی، کتاب النکاح، باب ما جاء فی قبلة الجسد، الحدیث: ۱۳۵۸۷، ج۷، ص۱۶۴.

www.dawateislami.net

ने इरशाद फ़रमाया : "जिस में तीन बातों में से कोई एक भी न पाई जाए तो वोह अपने किसी भी अ़मल के सवाब की उम्मीद न रखे : (1) ऐसा तक़्वा जो ह़राम कामों से रोके (2) ऐसा ह़िल्म जो उसे गुमराही से रोके (3) हुस्ने अख़्लाक़ जिस के साथ वोह लोगों में ज़िन्दगी गुज़ारे।"(1)

सब्र व सख़ावत की फ़ज़ीलत

﴿31﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(कामिल) ईमान सब्र और सख़ावत का ही नाम है।"(2)

﴿32﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह मोमिन जो लोगों से मेल जोल रखता और उन की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ पर सब्र करता है उस मोमिन से अफ़्ज़ल है जो लोगों से मेल जोल नहीं रखता और उन की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ पर सब्र नहीं करता।"(3)

﴿33﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़मीनो

---

1 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی حسن الخلق،الحدیث:٨٤٢٤،ج٦،ص٣٣٩.

2 .....المسند لابی یعلی،مسند جابر بن عبداللّٰہ،الحدیث:١٨٤٩،ج٢،ص٢٢٠.

3 .....السنن الکبری للبیھقی،کتاب آداب القاضی،باب فضل المؤمن القوی.....الخ، الحدیث:٢٠١٧٥،ج١٠،ص١٥٣.

www.dawateislami.net

आस्मान की सैर कराई गई तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने एक शख़्स को फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला देख कर उस के लिये बद दुआ फ़रमाई तो उसे हलाक कर दिया गया। फिर एक और शख़्स को गुनाहों में मुब्तला देख कर उस के लिये भी बद दुआ फ़रमाई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की तरफ़ वह्यी फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम ! बेशक जिस ने मेरी नाफ़रमानी की वोह मेरा ही बन्दा है और तीन बातों में से कोई एक उसे मेरे ग़ज़ब से बचा लेगी, या तो वोह तौबा कर लेगा तो मैं उस की तौबा क़बूल कर लूंगा या वोह मुझ से मग़फ़िरत चाहेगा तो मैं उस की मग़फ़िरत फ़रमा दूंगा या फिर उस की नस्ल से ऐसे लोग पैदा होंगे जो मेरी इबादत करेंगे। ऐ इब्राहीम ! क्या तुझे मा'लूम नहीं कि मेरे नामों में से एक नाम येह भी है कि मैं सब्बूर (या'नी बहुत ज़ियादा हिल्म वाला) हूं।"(1)

﴾34﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी तक्लीफ़ देह बात को सुन कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा सब्र करने वाला कोई नहीं कि लोग उस की तरफ़ अवलाद मन्सूब करते हैं लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फिर भी उन्हें मुआ़फ़ फ़रमाता और रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है।"(2)

﴾35﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि जब तुम अपने किसी मुसलमान भाई को गुनाहों में मुब्तला

---

1 ......المعجم الاوسط، الحديث: ٧٤٧٥، ج٥، ص ٣٢٢.

2 ......صحيح المسلم، كتاب صفة القيامة و الجنة و النار، باب لا احد اصبر على ......الخ، الحديث: ٢٨٠٤، ص ١٥٠٦.

www.dawateislami.net

देखो तो उस के ख़िलाफ़ शैतान के मददगार न बन जाओ कि तुम यूं कहो : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का बुरा करे।" बल्कि यूं कहो : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और उस की मग़्फ़िरत फ़रमाए।"(1)

ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद पर क़ाबू पाने की फ़ज़ीलत

﴿36﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ता़क़तवर वोह नहीं जो लोगों को पछाड़ दे।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फिर ता़क़तवर कौन है?" इरशाद फ़रमाया : "वोह जो ग़ुस्से के वक़्त अपने आप को क़ाबू में रखे।"(2)

﴿37﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ लोगों के पास से गुज़रे तो देखा कि वोह पथ्थर उठाने का मुक़ाबला कर रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह क्या हो रहा है?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह वोह पथ्थर है जिसे हम ज़मानए जाहिलिय्यत में ता़क़तवर का पथ्थर कहा करते थे।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें तुम्हारे सब से ता़क़तवर शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ न बताऊं? तुम में से ज़ियादा ता़क़तवर वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद

---

1 .....المعجم الكبير،الحديث:٨٥٧٤،ج٩،ص١١٠،بتغيرٍ قليلٍ.

2 .....صحيح المسلم،كتاب البر والصلة،باب فضل من يملك نفسه.....الخ، الحديث:٢٦٠٨،ص١٤٠٦.

www.dawateislami.net

पर ज़ियादा क़ाबू पाने वाला है।''(1)

﴾38﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे कौन सी चीज़ ग़ज़बे इलाही से बचा सकती है ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''गुस्सा मत किया करो।''(2)

﴾39﴿.....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''तौरात में लिखा है : ''जब तुझे गुस्सा आए तो मुझे याद कर, जब मुझे जलाल आएगा तो मैं तुझे याद रखूंगा और जब तुझ पर ज़ुल्म किया जाए तो तू सब्र कर, मेरा तेरी मदद करना तेरे लिये अपनी मदद करने से बेहतर है। अपने हाथ को ह़रकत दे, तेरे लिये रिज़्क़ के दरवाज़े खुल जाएंगे।''(3)

रह़्म और नर्म दिली की फ़ज़ीलत

﴾40﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ रह़ीम को ही अपनी रह़मत अ़ता फ़रमाता है।'' हम ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हम सब रह़ीम हैं ?'' इरशाद फ़रमाया कि ''रह़ीम वोह नहीं जो मह़ज़ अपनी ज़ात और अपने अहले ख़ाना पर रह़्म करे बल्कि

1 ......جامع الاحادیث للسیوطی،مسندانس بن مالك،الحدیث:١٣٠٨٧،ج١٨،ص٤٩٣.

2 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندابنِ عمرو،الحدیث:٦٦٤٦،ج٢،ص٥٨٧.

3 ......فیض القدیر،تحت الحدیث:٦٠٢٢،ج٤،ص٦٢٩.

www.dawateislami.net

रह़ीम वोह है जो तमाम मुसलमानों पर रह़्म करे।''(1)

﴿41﴾.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ''अगर तुम मेरी रह़मत चाहते हो तो मेरी मख़्लूक़ पर रह़्म करो।''(2)

﴿42﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रह़्म करने वाले बन्दों पर ही रह़्म फ़रमाता है।''(3)

﴿43﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो लोगों पर रह़्म नहीं करता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म नहीं फ़रमाता।''(4)

﴿44﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो रह़्म नहीं करता उस पर रह़्म नहीं किया जाता और जो मुआ़फ़ नहीं करता उसे मुआ़फ़ नहीं किया जाता।''(5)

---

1 .....الزهدلهناد،باب الرحمة،الحديث:١٣٢٥،ج٢،ص٦١٦.

2 .....الكامل فی ضعفاء الرجال،الرقم٥٩٣١٢٣خالدبن عمرو،ج٣،ص٤٥٧.

3 .....صحيح البخاری،كتاب الجنائز،باب قول النبی"يعذب الميت.....الخ"، الحديث:١٢٨٤،ج١،ص٤٣٤.

4 .....صحيح المسلم،كتاب الفضائل،باب رحمة الصبيان والعيال وتواضعه، الحديث:٢٣١٩،ص١٢٦٨.

5 .....الترغيب والترهيب،كتاب القضاء وغيره،باب فی شفقة علی خلق الله.....الخ، الحديث:٣٤٤٨،ج٣،ص١٥٤.

www.dawateislami.net

﴾45﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो अहले ज़मीन पर रह़्म नहीं करता आस्मान का मालिक उस पर रह़्म नहीं फ़रमाता।''(1)

﴾46﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अहले ज़मीन पर रह़्म करो, आस्मान का मालिक तुम पर रह़्म करेगा।''(2)

﴾47﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि ''रह़्म करो तुम पर रह़्म किया जाएगा। मुआ़फ़ करो तुम्हें मुआ़फ़ किया जाएगा।''(3)

﴾48﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सह़्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक औ़रत बारगाहे रिसालत में किसी ह़ाजत की ग़रज़ से ह़ाज़िर हुई लेकिन उसे नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब पहुंचने के लिये कोई जगह न मिल सकी। येह देख कर एक सह़ाबी अपनी जगह से उठ गए और वोह औ़रत वहां बैठ गई। फिर उस की ह़ाजत पूरी हो गई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''तुम ने ऐसा क्यूं किया ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''मुझे इस पर

---

1 .....الترغيب والترهيب، كتاب القضاء وغيره، باب فى شفقة على خلق الله.....الخ، الحديث: ٣٤٥١، ج٣، ص١٥٤.

2 .....مصنف ابن ابى شيبه، كتاب الادب، باب ماذكر فى الرحمة من الثواب، الحديث: ١٠، ج٦، ص٩٤.

3 .....شعب الايمان للبيهقى، باب فى معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث: ٧٢٣٦، ج٥، ص٤٤٩.

www.dawateislami.net

रह़्म आ गया था।" येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए।"(1)

﴿49﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना कुरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं बकरी को ज़ब्ह़ करता हूं तो मुझे उस पर रह़्म आ जाता है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम बकरी पर रह़्म करोगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाएगा।"(2)

ग़ुस्सा पी जाने की फ़ज़ीलत

﴿50﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस जुहनी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो इन्तिक़ाम की क़ुदरत के बा वुजूद ग़ुस्सा पी जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन मख़्लूक़ के सामने बुलाएगा और उसे इख़्तियार देगा कि ह़ूरों में से जिसे चाहे ले ले।"(3)

﴿51﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी का कोई घूंट पीना ग़ुस्से के उस घूंट से अफ़्ज़ल नहीं है जिसे वोह रिज़ाए इलाही के लिये पीता है।"(4)

---

1 .....المعجم الكبير، الحديث: ٥٨٥٤، ج٦، ص١٦١، رحمتها بدله افرحمتها.

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، بقية حديث معاوية بن قره، الحديث: ١٥٥٩٢، ج٥، ص٣٠٤.

3 .....سنن الترمذي، كتاب صفة القيامة، باب٤٨، الحديث: ٢٥٠١، ج٤، ص٢٢٢.

4 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمر، الحديث: ٦١٢٢، ج٢، ص٤٨٢.

www.dawateislami.net

﴾52﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुछ ऐसे लोगों के क़रीब से गुज़रे जो कुश्ती लड़ रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "येह क्या हो रहा है ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फुलां बहुत क़वी है। जो भी उस से लड़ता है वोह उसे पछाड़ देता है।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़ियादा ताक़तवर के बारे में न बताऊं ? वोह शख़्स जिस पर कोई ज़ुल्म करे और वोह गुस्सा पी जाए और अपने गुस्से पर क़ाबू पा ले तो ऐसा शख़्स अपने और दूसरे शख़्स के शैतान पर ग़ालिब आ जाता है।"(1)

﴾53﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम अबू ज़मज़म की तरह बनने से आजिज़ हो ?" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "अबू ज़मज़म कौन है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह वोह शख़्स है कि जब सुब्ह होती है तो कहता है : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ وَھَبْتُ نَفْسِیْ وَعِرْضِیْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपनी जान और इ़ज़्ज़त हिबा की। पस वोह गाली देने वाले को गाली न देता, ज़ुल्म करने वाले पर ज़ुल्म न करता और मारने वाले को न मारता।"(2)

﴾54﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا आयते मुबारका وَالْکٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ (پ٤،ال عمران:١٣٤)

1 ......مسندالبزار،مسندابی همزه انس بن مالك،الحديث:٧٢٧٢،ج٢،ص٣٤٥.

2 ......جامع الاحاديث للسيوطی،حرف الهمزه مع الياء،الحديث:٩٤٤٧،ج٣،ص٤١٠.

www.dawateislami.net

"**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ग़ुस्से को पीने वाले ।" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि "इस से मुराद येह है कि जब कोई शख़्स तुम से ज़बान दराज़ी करे और तुम उस का जवाब देने की ताक़त रखते हो लेकिन फिर भी अपना ग़ुस्सा पी जाते हो और उसे कोई जवाब नहीं देते ।"

लोगों से दर गुज़र करने की फ़ज़ीलत

﴿55﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़नील उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन जब लोग हिसाब के लिये खड़े होंगे तो एक मुनादी ए'लान करेगा कि "वोह शख़्स जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए ।" फिर दूसरी मरतबा ए'लान करेगा कि "वोह शख़्स जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो ।" लोग पूछेंगे : "वोह कौन है जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है ?" मुनादी कहेगा : "वोह जो लोगों से दर गुज़र करने वाले थे ।" चुनान्चे, बे शुमार लोग खड़े होंगे और बिग़ैर हिसाबो किताब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।"[1]

﴿56﴾.....हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिला तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़क़्बा ! क्या मैं तुम्हें दुन्या

---

1 .....الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب الترغیب فی العفو عن القاتل، الحدیث: ۱۷، ج۳، ص۲۱۱.

www.dawateislami.net

व आख़िरत वालों के अच्छे अख़्लाक़ के बारे में न बताऊं ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ज़रूर इरशाद फ़रमाइये ।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआ़फ़ कर दो ।"(1)

﴾57﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किये जाएं तो उसे चाहिये कि जो उस पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दे, जो उसे मह़रूम करे उसे अ़त़ा करे और जो उस से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ी करे उस से तअ़ल्लुक़ जोड़े ।"(2)

﴾58﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह जदली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि मैं ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हु़स्ने अख़्लाक़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न बुरी बात करने वाले, न बुरे काम करने वाले, न बाज़ारों में शोर मचाने वाले और न ही बुराई का बदला बुराई से देने वाले थे बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो मुआ़फ़ फ़रमाने वाले और दर गुज़र फ़रमाने वाले थे ।"(3)

---

1 ......المعجم الكبير،الحديث:٧٣٩،ج١٧،ص٢٦٩.

2 ......المستدرك،كتاب التفسير،باب تحت آية: كنتم خير امة اخرجت للناس، الحديث:٣٢١٥،ج٣،ص١٢.

3 ......سنن الترمذى،كتاب البر و الصلة،باب ما جاء فى خلق النبى،الحديث:٢٠٢٣، ج٣،ص٤٠٩.

www.dawateislami.net

﴾59﴿.....उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि **सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिहाद के इ़लावा कभी किसी शख़्स को अपने हाथ से नहीं मारा और न ही कभी अपनी ज़ात की ख़ातिर इन्तिक़ाम लिया। हां जब कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों का इर्तिकाब करता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये उस से इन्तिक़ाम लेते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जो सुवाल किया गया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से मन्अ़ नहीं फ़रमाया सिवाए गुनाह का सबब बनने वाली बात के क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन मुआ़मलात में लोगों से दूर रहते थे। जब भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दो कामों का इख़्तियार दिया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आसान काम को ही इख़्तियार फ़रमाया।''(1)

﴾60﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो शर्मसार की लग़्ज़िश को मुआ़फ़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाएगा।''(2)

﴾61﴿.....उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अहले मुरव्वत (مُرَوَّت) की लग़्ज़िशों को मुआ़फ़ करो जब तक कि वोह शरई सज़ा के ह़क़दार न हो जाएं।''(3)

---

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشه، الحديث: ٢٥٠٣٩، ج٩، ص٤٥١، بتغيرٍ قليلٍ.

2 .....مسند البزار، مسند ابی هريره، الحديث: ٨٩٦٧، ج٢، ص٤٧٧.

3 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشه، الحديث: ٢٥٥٣٠، ج٩، ص٥٤٤.

www.dawateislami.net

﴾62﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि "मुरव्वत वालों को सज़ा न दो जब कि वोह सालेह़ हों।"(1)

﴾63﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सदक़े से माल में हरगिज़ कमी नहीं होती। जो बन्दा दर गुज़र करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की इ़ज़्ज़त बढ़ा देता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है।"(2)

﴾64﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मरवान बिन जुनाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "दुन्या इसी बात पर क़ाइम है कि कोई शख़्स बद सुलूकी करने वाले को मुआ़फ़ कर दे।"(3)

﴾65﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा बिन ह़ल्बस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "ख़ुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जो उस जगह ह़क़ अदा करे जहां लोग ह़क़ अदा करना न जानते हों। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रिज़ा की मा'रिफ़त अ़ता फ़रमा देता है येह ऐसा ज़माना होता है कि गुमनाम रहने वाला ही नजात पा सकता है। उन के दिल तारीकी के चराग़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल देता और उन्हें हर गर्द आलूद अन्धेरे मक़ाम से नजात अ़ता फ़रमाता है।"

---

1 .....فیض القدیر،حرف التاء،تحت الحدیث:۳۲۳۳،ج۳،ص۲۹۹.

2 .....صحیح المسلم،کتاب البر والصلة،باب الا ستحباب العفو.....الخ، الحدیث:۲۵۸۸،ص۱۳۹۷.

3 .....تاریخ مدینه دمشق لابن عساکر،الرقم۲۱۵۷الربیع بن یحیی،ج۱۸،ص۸٤.

www.dawateislami.net

मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही की फ़ज़ीलत

﴾66﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दीन ख़ैर ख़्वाही है।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस की ? इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की, उस की किताब की, उस के रसूल की, मुसलमानों के इमाम की और आ़म मोअमिनीन की।"(1)

﴾67﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह और आपस में मह़ब्बत करने वाले होते हैं अगर्चे उन के शहर मुख़्तलिफ़ हों और मुनाफ़िक़ एक दूसरे से धोका करने वाले होते हैं अगर्चे उन के शहर एक ही हों।"(2)

﴾68﴿.....हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "अगर मैं किसी मस्जिद में पहुंचूं और वोह लोगों से खचा खच भरी हो फिर मुझ से पूछा जाए कि इन में सब से बेहतर शख़्स कौन है ? तो मैं सुवाल करने वाले से पूछूंगा : क्या तुम इन में सब से ज़ियादा ख़ैरख़्वाही करने वाले को पहचानते हो ? अगर वोह उस को पहचानता होगा तो मैं कहूंगा कि "येही सब से बेहतर है और मैं येह भी जानता हूं कि इन्हें धोका देने वाला सब से बद तरीन शख़्स है। मुझे इन के बेहतरीन शख़्स पर शर में मुब्तला

---

1 .....صحیح المسلم، کتاب الایمان، باب بیان الدین النصیحة، الحدیث: ۵۵، ص ۴۷.

2 .....الترغیب و الترھیب، کتاب البیوع، باب الترھیب من الغش و الترغیب فی.....الخ، الحدیث: ۱۲، ج ۲، ص ۳۶۱.

www.dawateislami.net

हो जाने का ख़ौफ़ है और इन के बुरे शख़्स के नेक हो जाने की उम्मीद भी है।"

﴾69﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में से कोई भी उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वोह अपने मुसलमान भाई के लिये भी वोही पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।"(1)

﴾70﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अफ़्ज़ल ईमान के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल ईमान येह है कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर महब्बत रखे और उसी की ख़ातिर बुग़्ज़ रखे और तेरी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से तर रहे।" फिर पूछा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस के बा'द ?" इरशाद फ़रमाया : "लोगों के लिये वोही पसन्द करो जो अपने लिये करते हो और लोगों के लिये वोही नापसन्द करो जो अपने लिये नापसन्द करते हो और अच्छी बात करो या ख़ामोश रहो।"(2)

दिल की पाकीज़गी और मुसलमानों के कीने से बचने की फ़ज़ीलत

﴾71﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

1 .....صحیح المسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان من خصال.....الخ، الحدیث: ٤٥، ص ٤٢.

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث معاذبن جبل، الحدیث: ٢٢١٩٣، ج٨، ص ٢٦٦.

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के अब्दाल जन्नत में (महज़) अपने आ'माल की बिना पर दाख़िल न होंगे बल्कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत, नफ़्स की सख़ावत, दिल की पाकीज़गी और तमाम मुसलमानों पर रह़ीम होने की वजह से जन्नत में दाख़िल होंगे।"(1)

﴿72﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हम बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर थे कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस रास्ते से तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा।" इतने में एक अन्सारी सह़ाबी आए जिन की दाढ़ी से वुज़ू का पानी टपक रहा था। उन्हों ने अपने जूते बाएं हाथ में पकड़े हुवे थे। फिर उन्हों ने सलाम किया। दूसरे दिन फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही इरशाद फ़रमाया तो फिर वोही अन्सारी सह़ाबी पहले की त़रह़ आए। तीसरे दिन भी ऐसा ही हुवा। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मजलिस से उठे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन सह़ाबी के पीछे हो लिये और उन से कहने लगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं ने अपने वालिद से ह़या की है, मैं 3 दिन तक उन के पास नहीं जाऊंगा अगर आप मुनासिब समझें तो तीन दिन मुझे अपने पास ठहरने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं।" अन्सारी सह़ाबी ने इजाज़त दे दी। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 .....کنز العمال، کتاب الفضائل، باب لحو ق فی القطب والابدال، الحدیث: ٣٤٥٩٦، ج١٢، ص٨٥.

www.dawateislami.net

ने उन्हें बताया कि "मैं ने तीन रातें उन के साथ गुज़ारीं लेकिन उन्हें रात में इबादत करते न देखा। हां ! जब वोह अपने बिस्तर पर करवट लेते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र और उस की किब्रियाई बयान करते यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र के लिये उठ खड़े होते।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अन्सारी सहाबी से अच्छी बात के इलावा कुछ न सुना। जब तीन दिन पूरे हुवे तो क़रीब था कि मैं उन के आ'माल को हक़ीर जानता लेकिन जब मैं ने उन अन्सारी सहाबी से कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मेरे और मेरे वालिद के दरमियान कोई नाराज़ी और जुदाई नहीं है बल्कि मैं ने तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तीन बार फ़रमाते सुना कि अभी तुम्हारे पास एक जन्नती शख़्स आएगा और तीनों बार आप ही आए। चुनान्चे, मैं ने पुख़्ता इरादा कर लिया कि मैं आप के पास ठहरूंगा और देखूंगा कि आप क्या अ़मल करते हैं ताकि मैं भी आप की पैरवी करूं। लेकिन मैं ने आप को कोई बड़ी इबादत करते नहीं देखा तो फिर आप कैसे इस बुलन्द मक़ाम तक पहुंचे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के मुतअ़ल्लिक़ येह बात इरशाद फ़रमाई ?" अन्सारी सहाबी ने जवाब दिया : "और तो कोई अ़मल नहीं बस येही है जो आप ने देखा।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि येह बात सुन कर जब मैं वहां से चलने लगा तो अन्सारी सहाबी ने मुझे आवाज़ दी और कहा : "मेरा कोई और अ़मल नहीं बस येही है जो आप ने देखा। इस के इलावा मैं किसी भी मुसलमान के लिये अपने दिल में खोट नहीं पाता और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी को दिया है उस पर हसद नहीं करता।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने उन से कहा : "येही वोह

www.dawateislami.net

अ़मल है जिस ने आप को रिफ़्अ़तें बख़्शीं और हम इस की त़ाक़त नहीं रखते।''(1)

《73》.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या बिन क़ुर्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''लोगों में अफ़्ज़ल तरीन वोह है जो उन में सब से पाकीज़ा सीने वाला और सब से ज़ियादा ग़ीबत से बचने वाला है।''(2)

《74》.....ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया कि ''सोने वाला मग़्फ़िरत याफ़्ता और क़ियाम करने वाला मश्कूर कैसे होगा?'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''एक शख़्स रात को क़ियाम करता है और अपने सोए हुवे भाई के लिये पीठ पीछे दुआ़ करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस क़ियाम करने वाले की दुआ़ के सबब उस सोने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है और सोने वाले की ख़ैर ख़्वाही की वजह से क़ियाम करने वाला इस बात का मुस्तह़िक़ होता है कि उस का शुक्रिय्या अदा किया जाए।''

लोगों में सुल्ह़ कराने की फ़ज़ीलत

《75》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें दरजे के ए'तिबार से नमाज़, रोज़े और सदक़े से अफ़्ज़ल अ़मल के बारे में न बताऊं?'' सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं।'' आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''आपस के तअ़ल्लुक़ात को

1 ......المصنف لعبدالرزاق، کتاب العلم، باب الرخص و الشدائد، الحدیث: ۲۰۹۴۴، ج۱۰، ص۲۶۰۔

2 ......المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، حدیث ابی قلابۃ، الحدیث: ۸، ج۸، ص۲۵۴۔

www.dawateislami.net

अच्छा करो क्यूंकि ना इत्तिफ़ाक़ी दीन को मूंड देने वाली है।"(1)

अदाएगिये हुक़ूक़ की फ़ज़ीलत

《76》.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने अपनी ज़बान से कोई हक़ पूरा किया तो उस का अज्र बढ़ता रहेगा हत्ता कि क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस का पूरा पूरा सवाब अ़ता फ़रमाएगा।"(2)

मज़लूम की मदद करने की फ़ज़ीलत

《77》.....हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मज़लूम की मदद करने का हुक्म दिया।"(3)

《78》.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपने भाई की मदद करो ख़्वाह ज़ालिम हो या मज़लूम।" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं मज़लूम की मदद तो कर सकता हूं लेकिन ज़ालिम की मदद कैसे करूं ?" इरशाद फ़रमाया : "उसे ज़ुल्म से रोको।"(4)

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ٥٦، الحدیث: ٢٥١٧، ج٤، ص٢٢٨.

2 ......حلیة الاولیاء، الرقم ٣٩٩ عبداللّٰه بن مبارك، الحدیث: ١١٨٥١، ج٨، ص١٩٢.

3 ......سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراهیة لبس......الخ، الحدیث: ٢٨١٨، ج٤، ص٣٦٩.

4 ......سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ٦٨، الحدیث: ٢٢٦٢، ج٤، ص١١٢.

www.dawateislami.net

ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकने का बयान

﴿79﴾.....हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी हाज़िम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते हुवे सुना कि ऐ लोगो ! तुम येह आयते मुबारका पढ़ते हो :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْؕ (پ۷،المائدہ:۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो ।*

(फिर फ़रमाया) मैं ने सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "जब लोग ज़ालिम को देखें और उसे ज़ुल्म से न रोकें तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब पर अ़ज़ाब भेजे ।"(1)

﴿80﴾.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम देखो कि मेरी उम्मत ज़ालिम की ता'ज़ीम कर रही है तो तुम्हारा ज़ालिम को ज़ालिम कहना तुम्हें उन से जुदा कर देगा ।"(2)

नादान को रोकने का बयान

﴿81﴾.....हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने नादानों

1 .....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب سورۃ مائدہ، الحدیث:۳۰۶۸، ج۵، ص۴۱.

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰہ بن عمرو، الحدیث:۶۷۹۸، ج۲، ص۶۲۱.

www.dawateislami.net

को रोके रखो।''(1) (2)

मुसलमानों की मदद और इन की ज़रूरत पूरी करने की फ़ज़ीलत

﴾82﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों की ह़ाजतें पूरी करने के लिये पैदा फ़रमाया है। लोग ह़ाजत के वक़्त उन की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। येही वोह लोग हैं जो क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ होंगे।''(3)

﴾83﴿.....हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ख़ैर और शर के ख़ज़ाने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास हैं और इन की चाबियां इन्सान हैं। उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ैर की चाबी और शर के लिये ताला बनाया और हलाकत है उस

---

1 ....हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इस ह़दीसे मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं कि ''इस में ख़िताब सर परस्त को है कि वोह अपने ना समझ मा तह़्त को फ़ुज़ूल ख़र्ची से रोकें।''

(فیض القدیر للمناوی، تحت الحدیث: ۳۸۹٤، ج۳، ص۵۷۹، ملخصًا)

2 .....شعب الایمان للبیهقی، باب احادیث فی الامر بالمعروف والنهی عن المنکر، الحدیث: ۷۵۷۷، ج٦، ص۹۲.

3 .....المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۳۳۳٤، ج۱۲، ص۲۷٤.

www.dawateislami.net

के लिये जिसे शर की चाबी और ख़ैर के लिये ताला बनाया।''(1)

﴿84﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ''मैं रब हूं। मैं ने ख़ैर व शर को मुक़द्दर फ़रमा दिया है। ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस के हाथ में ख़ैर की चाबी है और ख़राबी है उस के लिये जिस के हाथ में शर की चाबी है।''(2)

﴿85﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जिस ने किसी मोमिन से तक्लीफ़ व मुसीबत को दूर किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये पुल सिरात़ पर नूर के दो ऐसे ह़िस्से पैदा फ़रमाएगा जिन की रोशनी से इतनी मख़्लूक़ रोशनी ह़ासिल करेगी जिन की ता'दाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।''(3)

﴿86﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो शख़्स किसी मुसलमान की दुन्यावी मुसीबत दूर करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत में उस की मुसीबत दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसलमान के ऐ़ब छुपाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस के उ़यूब छुपाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस

---

1 .....المعجم الكبير،الحديث:٥٨١٢،ج٦،ص١٥٠.

2 .....الدرالمنثور،سورة الانبياء،تحت الآيه:٢١،ج٥،ص٦٢٢.

3 .....المعجم الاوسط،الحديث:٤٥٠٤،ج٣،ص٢٥٤.

www.dawateislami.net

वक़्त तक बन्दे की मदद करता रहता है जब तक वोह अपने मुसलमान भाई की मदद करता रहता है।"(1)

﴾87﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मख़्लूक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की परवर्दा है (या'नी तमाम मख़्लूक़ को वोही पालने वाला है) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अपनी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा महबूब वोह है जो उस के परवर्दा को सब से ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचाए।"(2)

﴾88﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुसलमान भाई की हाजत रवाई की गोया उस ने सारी उम्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की।"(3)

﴾89﴿....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये इमारत की तरह है जिस का बा'ज़ हिस्सा बा'ज़ को तक़विय्यत पहुंचाता है।"(4)

﴾90﴿....हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोअमिनीन की आपस में रहम, महब्बत और

---

1 ......صحیح المسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ......الخ، الحدیث:۲۶۹۹، ص۱۴۴۷.

2 ......المسند لابی یعلی الموصلی، الحدیث:۳۴۶۵، ج۳، ص۲۳۲.

3 ......الفردوس بماثور الخطاب، باب المیم، الحدیث:۶۱۱۱، ج۲، ص۲۸۶.

4 ......صحیح البخاری، کتاب المظالم و الغضب، باب نصر المظلوم، الحدیث:۲۴۴۶، ج۲، ص۱۲۷.

www.dawateislami.net

सिलए रेह़मी करने की मिसाल एक जिस्म की सी है कि जब उस के किसी उ़ज़्व को तक्लीफ़ पहुंचती है तो पूरा जिस्म बुख़ार और बे ख़्वाबी का शिकार हो जाता है।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन अह़मद त़बरानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि मैं ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो मैं ने इस (मज़कूरा) ह़दीस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन बार हाथ का इशारा कर के फ़रमाया : ''येह सह़ीह़ है।''

﴿91﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''तुम्हारा अपने मुसलमान भाई को ख़ुश करना या उस का क़र्ज़ अदा कर देना या उसे खाना खिलाना।''(2)

﴿92﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मोमिन मोमिन का आईना है। मोमिन मोमिन का भाई है। जहां भी मिले उसे नुक़्सान से बचाता और पीठ पीछे उस की हिफ़ाज़त करता है।''(3)

---

1 .....شرح السنة للبغوی، کتاب البر والصلة، باب تعاون المؤمن وتراحمهم، الحدیث: ۳۳۵۳، ج٦، ص٤٥٣.

2 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی التعاون علی البر والتقوی، الحدیث: ٧٦٧٨، ج٦، ص١٢٣.

3 .....سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النصیحة والحیاطة، الحدیث: ٤٩١٨، ج٤، ص٣٦٥.

www.dawateislami.net

﴾93﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि एक दिन मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "मुझे ऐसे दरख़्त के बारे में बताओ जो मुसलमान मर्द के मुशाबेह होता है और उस के पत्ते नहीं गिरते वोह अपने रब के हुक्म से हर वक़्त फल देता है।" हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में ख़याल आया कि हो न हो येह खजूर का दरख़्त है लेकिन मैं ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की मौजूदगी में बोलना मुनासिब ख़याल न किया। जब वोह दोनों भी न बोले तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ही इरशाद फ़रमाया कि "वोह खजूर का दरख़्त है।"(1)

﴾94﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी मोमिन की मेहमान नवाज़ी करे या उस की ह़ाजात को उस पर आसान कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि जन्नत में उसे ख़ुद्दाम अ़त़ा करे।"(2)

किसी की परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत

﴾95﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, माहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 .....مسند البزار، مسند عبد اللّٰہ بن عباس، الحدیث: ٥٧١٤، ج٢، ص٢٣٦.

2 .....حلیۃ الاولیاء، یزید بن ابان رقاشی، الحدیث: ٣١٧٣، ج٣، ص٦٢، من اضاف مؤمنا بدله من خدم مؤمنا.

www.dawateislami.net

ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ परेशान हालों की मदद करने को पसन्द फ़रमाता है।"(1)

﴿96﴾...हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी ग़मज़दा की दस्तगीरी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये 73 नेकियां लिखता है। एक नेकी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दुन्या व आख़िरत को संवारता और बाक़ी नेकियां उस के लिये दरजात की बुलन्दी का सबब बनती हैं।"(2)

﴿97﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक मरतबा हम सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शरीके सफ़र थे कि एक शख़्स कमज़ोर सी सुवारी पर सुवार हो कर आया और उस ने अपनी सुवारी को दाएं बाएं घुमाना शुरूअ़ कर दिया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस के पास फ़ालतू सुवारी हो वोह बे सुवारी वाले को अ़ता कर दे और जिस के पास बची हुई ख़ूराक हो वोह बिग़ैर ख़ूराक वाले को खिला दे।" इसी त़रह़ माल की मुख़्तलिफ़ अक़्साम ज़िक्र फ़रमाईं ह़त्ता कि हम ने महसूस किया कि बची हुई चीज़ में से किसी को अपने पास रख लेने का ह़क़ ही नहीं है।(3)

﴿98﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की :

---

1 .....المسند لابی یعلی الموصلی، حدیث سعد بن سنان عن انس، الحدیث: ۴۲۸۰، ج۳، ص۴۵۲.

2 .....المسند لابی یعلی الموصلی، حدیث سعد بن سنان عن انس، الحدیث: ۴۲۵۰، ج۳، ص۴۴۵.

3 .....سنن ابی داؤد، کتاب الزکوٰۃ، باب فی حقوق المال، الحدیث: ۱۶۶۳، ج۲، ص۱۷۵.

www.dawateislami.net

"या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बन्दे को कौन सी चीज़ दोज़ख़ से नजात दिलवाएगी ?" इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या ईमान के साथ कोई अ़मल भी है ?" इरशाद फ़रमाया : "बन्दे को जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रिज़्क़ दिया है उस में से कुछ न कुछ सदक़ा करता रहे।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर वोह फ़क़ीर हो कि देने के लिये कुछ न पाता हो तो ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह नेकी की दा'वत दे और बुराई से मन्अ़ करे।"

मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर वोह अच्छे त़रीक़े से गुफ़्तगू न कर सकता हो कि नेकी की दा'वत दे और बुराई से मन्अ़ करे तो ?" इरशाद फ़रमाया : "किसी जाहिल के साथ कोई नेकी कर दे।" मैं ने अ़र्ज़ की : "अगर वोह ख़ुद जाहिल हो किसी के साथ भलाई न कर सकता हो तो ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह मग़लूब की मदद करे।" फिर इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम अपने भाई में कोई भलाई नहीं छोड़ना चाहते कि लोगों से अज़िय्यत को दूर कर दे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या ऐसा करने वाला जन्नत में दाख़िल हो जाएगा ?" इरशाद फ़रमाया : "जो मोमिन या मुसलमान इन ख़स्लतों में से कोई ख़स्लत अपनाएगा मैं उस का हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में दाख़िल कर दूंगा।"[1]

कमज़ोरों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत

﴿99﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेवा और मिस्कीन की कफ़ालत के लिये कोशिश करने वाला

1 .....المعجم الكبير، الحديث: ١٦٥٠، ج٢، ص١٥٦.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की त़रह़ है।"(1)

﴾100﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेवा और मिस्कीन की कफ़ालत के लिये कोशिश करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले मुजाहिद या उस शख़्स की त़रह़ है जो दिन को रोज़ा रखता और रात को क़ियाम करता है।"(2)

﴾101﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने (किसी मुसलमान मुर्दे के लिये) क़ब्र खोदी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के लिये घर बनाएगा और उसे क़ियामत तक इस का अज्र मिलता रहेगा...., जिस ने मय्यित को ग़ुस्ल दिया वोह गुनाहों से ऐसे पाक साफ़ हो कर निकलता है जैसा कि उस दिन था कि जिस दिन उस की मां ने उसे जना था...., जिस ने मय्यित को कफ़न पहनाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मय्यित के कपड़ों की ता'दाद के बराबर जन्नती लिबास पहनाएगा...., जिस ने किसी ग़मज़दा को तसल्ली दी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और (जब वोह फ़ौत होगा तो) अरवाह़ में उस की रूह़ पर रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा,....जिस ने किसी मुसीबत ज़दा को तसल्ली दी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसे दो जन्नती ह़ुल्ले अ़त़ा फ़रमाएगा कि जिन की क़ीमत सारी दुन्या भी अदा नहीं कर सकती,

---

(1)......صحیح البخاری، کتاب النفقات، باب فضل النفقة علی الاهل، الحدیث:٥٣٥٣، ج٣، ص٥١١.

(2)......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی هریره، الحدیث:٨٧٤٠، ج٣، ص٢٨٥.

www.dawateislami.net

जो जनाज़े के पीछे चला यहां तक कि तदफ़ीन मुकम्मल हो गई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये तीन क़ीरात़ अज्र लिखेगा और एक क़ीरात़ उहुद पहाड़ से बड़ा है...., जिस ने किसी यतीम या बेवा की कफ़ालत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा और उसे अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा....,जो रोज़ा रखे या मिस्कीन को खाना खिलाए और जनाज़े के साथ चले और मरीज़ की इ़यादत करे तो उसे कोई गुनाह न पहुंचेगा।''[1]

यतीमों की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत

﴿102﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि दो जहां के ताजवर सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला ख़्वाह वोह यतीम रिश्तेदार हो या अजनबी जन्नत में ऐसे होंगे।'' इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने हाथ की उंगलियों से इशारा किया।[2]

﴿103﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मुसलमानों के घरों में सब से अच्छा घर वोह है जिस में यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता है और मुसलमानों के घरों में से बदतरीन घर वोह है जिस में यतीम के साथ बद सुलूकी की जाती है।'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं और यतीम

1 .....المعجم الاوسط،الحديث:٩٢٩٢،ج٦،ص٤٢٩،بدون اجرى له.....الى..... يوم القيامة.

2 .....الادب المفرد،باب فضل من يعول يتيمًا بين ابويه،الحديث:١٣٣،ص٥٨.

www.dawateislami.net

की कफ़ालत करने वाला जन्नत में ऐसे होंगे।" फिर शहादत और दरमियान की उंगली को जम्अ़ फ़रमा दिया।(1)

﴾104﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस दस्तरख़्वान पर यतीम हो शैत़ान उस दस्तरख़्वान के क़रीब नहीं जाता।"(2)

﴾105﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस शख़्स को अ़ज़ाब न देगा जिस ने यतीम पर रह़म किया और उस के साथ नर्मी से पेश आया और उस की यतीमी और ज़ईफ़ी पर रह़म किया और जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने फ़ज़्ल से वाफ़िर माल अ़त़ा फ़रमाया वोह इस की वजह से अपने पड़ोसी पर तकब्बुर नहीं करता।"(3)

﴾106﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी यतीम के सर पर हाथ फेरता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे हर बाल के बदले एक नेकी अ़त़ा फ़रमाता है और जिस की कफ़ालत में यतीम लड़का या लड़की हो ख़्वाह वोह

---

1 ......الادب المفرد، باب خیربیت بیت فیہ......الخ، الحدیث:۱۳۷، ص۵۸.

2 ......مجمع الزوائد، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الایتام والارامل والمساکین، الحدیث:۱۳۵۱۲، ج۸، ص۲۹۳، مفهومًا.

3 ......المعجم الاوسط، الحدیث:۸۸۲۸، ج۶، ص۲۹۶.

www.dawateislami.net

यतीम रिश्तेदार हो या अजनबी तो मैं और वोह जन्नत में इस त़रह़ होंगे ।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अंगूठे और शहादत की उंगली को मिला दिया ।"(1)

﴾107﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम अपने दिल को नर्म करना चाहते हो तो मिस्कीनों को खाना खिलाओ और यतीमों के सरों पर शफ़्क़त से हाथ फेरो ।"(2)

﴾108﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अ़म्र क़ुशैरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी मुसलमान यतीम की कफ़ालत करे यहां तक कि वोह यतीम उस से बे नियाज़ हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यक़ीनन उस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है ।"(3)

﴾109﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जबर अन्सारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक लड़के ने सरकारे वाला तबार हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मस्जिद में देखा तो अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो । मैं एक यतीम मिस्कीन लड़का हूं और मेरी ग़रीब व मोह़ताज वालिदा है जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमाया है उस में से थोड़ा सा हमें भी अ़त़ा फ़रमाइये !

---

(1)......شعب الايمان للبيهقى، باب فى رحم الصغير و توقير الكبير، الحديث: ١١٠٣٦، ج٧، ص ٤٧٢، بتغيير قليل.

(2)......شعب الايمان للبيهقى، باب فى رحم الصغير و توقير الكبير، الحديث: ١١٠٣٤، ج٧، ص ٤٧٢.

(3)......المعجم الكبير، الحديث: ٦٦٩، ج١٩، ص ٣٠٠.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की रिज़ा चाहता है यहां तक कि आप राज़ी हो जाएं ।" हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लड़के अपनी बात दोहराओ तुम्हारी ज़बान पर तो फ़िरिश्ता बोलता है ।" उस ने अपने कलाम को दोहराया । फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो कुछ आले रसूल के घर में है ले आओ ।"

चुनान्चे, एक लप (अनाज वग़ैरा का) पेश किया गया जो एक मुठ्ठी से ज़ियादा और दो से कम था । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ लड़के ! येह ले जाओ ! इस में तुम्हारे और तुम्हारी वालिदा और बहन के लिये दोपहर और रात का खाना है । मैं इस में बरकत की दुआ से तुम्हारी मदद करता रहूंगा ।" चुनान्चे, वोह लड़का वहां से रुख़्सत हो कर जब मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंचा तो उस का सामना ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से हुवा, आप ने उस के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा । रावी फ़रमाते हैं : येह मा'लूम नहीं कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उसे कुछ अ़ता किया या नहीं ? जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे तो हुज़ूर सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम यतीम से मिले थे, क्या मैं ने तुम्हें उस के सर पर हाथ फेरते नहीं देखा ?" ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं !" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस बाल पर तुम्हारा हाथ गुज़रा उस के बदले में तुम्हारे लिये नेकी है ।"

लिहाज़ा इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि यतीम के सर पर हाथ फेरना मुस्तह़ब है ।

www.dawateislami.net

ला वारिस बच्चों की तर्बिय्यत और इन के बड़े होने तक इन पर ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

﴾110﴿.....उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने किसी बच्चे की परवरिश की यहां तक कि वोह لَااِلٰہَ اِلَّا اللہ कहना शुरूअ़ कर दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स से ह़िसाब न लेगा।"(1) (2)

हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत

﴾111﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ख़त़्मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर भलाई सदक़ा है।"(3)

﴾112﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर भलाई सदक़ा है ख़्वाह ग़नी के साथ हो या फ़क़ीर के साथ।"(4)

1.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इस ह़दीसे मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं कि "येह ह़दीस अपनी अवलाद और ग़ैर की यतीम अवलाद वग़ैरा सब को शामिल है।" (فیض القدیر،تحت الحدیث:٨٦٩٦،ج٦،ص١٧٤)

2.....المعجم الاوسط،الحدیث:٤٨٦٥،ج٣،ص٣٧٠.

3.....المسند للامام احمدبن حنبل،حدیث عبداللّٰہ بن یزید خطمی انصاری، الحدیث:١٨٧٦٦،ج٦،ص٤٥٤.

4.....المعجم الکبیر،الحدیث:١٠٠٤٧،ج١٠،ص٩٠.

www.dawateislami.net

﴾113﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नेकी और बदी को लोगों के लिये पैदा किया गया है। बरोज़े क़ियामत इन्हें खड़ा किया जाएगा। नेकी अपने करने वालों को बिशारतें देगी और उन से भलाई का वा'दा करेगी जब कि बुराई कहेगी दूर हो जाओ मगर वोह इस की ताक़त नहीं रखेंगे बल्कि बुराई के साथ चिमटेंगे।(1)

﴾114﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या में नेकी करने वाले आख़िरत में भी नेकी वाले होंगे और दुन्या में बुराई करने वाले आख़िरत में भी बुराई वाले होंगे।"(2)

﴾115﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें मा'लूम है शेर धहाड़ते वक़्त क्या कहता है ?" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शेर कहता है : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे किसी नेक शख़्स पर मुसल्लत न फ़रमाना।"(3)

---

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل، حديث ابی موسی اشعری، الحديث: ١٩٥٠٤، ج٧، ص١٢٣.

2 .....المعجم الاوسط، الحديث: ١٥٦، ج١، ص١٥٦.

3 .....الفردوس بماثور الخطاب، باب التاء، الحديث: ٢١٥٥، ج١، ص٢٩٧.

www.dawateislami.net

﴾116﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सदक़ा अगर्चे 70 हज़ार हाथों में से गुज़रे तो भी आख़िरी शख़्स का अज्र पहले सदक़ा करने वाले के बराबर होगा।"(1)

﴾117﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर रोज़ तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द इन्सान के हर जोड़ पर सदक़ा है। अगर तुम दो बन्दों के दरमियान इन्साफ़ से फ़ैसला करो तो येह सदक़ा है। अगर तुम किसी की सुवारी पर सुवार होने में मदद करो तो येह भी सदक़ा है। अगर किसी का सामान सुवारी पर रखवा दो तो येह भी सदक़ा है। अच्छी बात करना भी सदक़ा है। हर क़दम जो नमाज़ की त़रफ़ उठे सदक़ा है और रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा देना भी सदक़ा है।"(2)

﴾118﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे क़रीब से गुज़रे, मेरे साथ एक शख़्स था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ उबय्य ! येह कौन है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "येह मेरा मक़रूज़ है। मैं इस से क़र्ज़ का तक़ाज़ा कर रहा हूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उबय्य ! इस से अच्छा सुलूक करो।" येह फ़रमाने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने किसी काम से तशरीफ़ ले गए। जब दोबारा मेरे पास

1 .....الفردوس بماثور الخطاب، باب اللام، فصل لو، الحديث: ٥١٢٨، ج٢، ص١٩٩.

2 .....صحيح المسلم، كتاب الزكوة، باب بيان ان اسم الصدقة.....الخ، الحديث: ١٠٠٩، ص٥٠٤.

www.dawateislami.net

से गुज़रे तो वोह शख़्स मेरे साथ न था। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : “ऐ उबय्य ! तुम ने अपने मक़रूज़ भाई के साथ क्या सुलूक किया ?” मैं ने अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह क़र्ज़ अदा नहीं कर सकता था। चुनान्चे, मैं ने अपने माल का एक तिहाई हिस्सा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर, एक तिहाई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ातिर और बाक़ी एक तिहाई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुझे अ़क़ीदए तौह़ीद की तौफ़ीक़ मिलने के सबब मुआ़फ़ कर दिया।” आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ख़ुश हो कर) तीन बार इरशाद फ़रमाया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे हमें इसी चीज़ का हुक्म दिया गया है।”

फिर इरशाद फ़रमाया : “ऐ उबय्य ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मख़्लूक़ में से कुछ लोगों को भलाई का सबब बनाया है। भलाई और भलाई के कामों को उन का मह़बूब बना दिया। भलाई के ह़रीसों पर भलाई का त़लब करना आसान फ़रमा दिया और उन पर अ़त़ा की बारिश बरसाई। लिहाज़ा ख़ैर त़लब करने वालों की मिसाल उस बारिश की सी है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बन्जर व क़ह़त़ ज़दा ज़मीन पर बरसाई इस के सबब से ज़मीन और अहले ज़मीन को ज़िन्दगी बख़्शी और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ में अच्छाई के दुश्मन भी पैदा फ़रमाए हैं। फिर भलाई और भलाई के कामों को उन के लिये नापसन्दीदा बना दिया और उन्हें भलाई त़लब करने से रोक दिया उन की मिसाल उस बारिश की सी है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ह़त़ ज़दा ज़मीन पर बरसने से रोक दिया और इस के सबब ज़मीन और अहले ज़मीन को हलाक फ़रमा दिया।”(1)

---

1 ......الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب قضاء الحوائج،باب فی فضل المعروف، الحديث:٤، ج٤،ص١٤١.

www.dawateislami.net

अच्छे आ'माल करने की फ़ज़ीलत

﴾119﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुस्ने अख़्लाक़ और अच्छे आ'माल को कमाल तक पहुंचाने के लिये मबऊ़स फ़रमाया है।"(1)

﴾120﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अच्छे और आ'ला कामों को पसन्द और बुरे कामों को नापसन्द फ़रमाता है।"(2)

﴾121﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये 117 अख़्लाक़ हैं। जो बन्दा इन में से किसी एक को अपनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।"(3)

﴾122﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर एक लौह़ है जिस पर 315 अख़्लाक़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है जो इन में से किसी एक पर अ़मल करे और मेरे साथ किसी को

1 .....المعجم الاوسط،الحدیث:٦٨٠٥،ج٥،ص١٥٣.

2 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی حسن الخلق،الحدیث:٨٠١٢،ج٦،ص٢٤١.

3 .....مسندابی داؤدطیالسی،الجزء الاول،حدیث عثمان بن عفان،ص١٤.

www.dawateislami.net

शरीक न ठहराए तो मैं उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा।"(1)

﴿123﴾.....मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ईमान के 333 अवसाफ़ हैं। जो इन में से किसी एक पर भी अ़मल करेगा जन्नत में दाख़िल होगा।"(2)

मुसलमान पर ज़ुल्म करने की मज़म्मत

﴿124﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को गुनाहों के बा वुजूद (ने'मतें) अ़ता फ़रमा रहा है तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के लिये ढील (या'नी मोहलत) है।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये। यहां तक कि जब ख़ुश हुवे उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह*

---

1 .....عمدة القاری شرح صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب امور الایمان، تحت الحدیث: ۹، ج۱، ص۱۹۶.

2 .....معرفة الصحابة لابی نعیم، الرقم ۱۹۴۳ عبید ابو عبدالرحمن، الحدیث: ۴۸۰۶، ج۳، ص۳۲۸.

www.dawateislami.net

ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۵﴾ (پ۷، الانعام:۴۴،۴۵)

गए तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की और सब ख़ूबियों सराहा **अल्लाह** रब सारे जहां का। (1)

﴾125﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूस होना उस की मदद से ना उम्मीद होना और उस की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना बड़े कबीरा गुनाहों में से है।''(2)

﴾126﴿.....हज़रते सय्यिदुना खुज़ैमा बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मज़्लूम की बद दुआ़ से बचो कि येह आस्मानों पर उठाई जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ''(ऐ मज़्लूम!) मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम मैं तेरी मदद ज़रूर करूंगा अगर्चे कुछ ताख़ीर से हो।''(3)

﴾127﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मज़्लूम की बद दुआ़ से बचो अगर्चे वोह काफ़िर ही क्यूं न हो क्यूंकि उस का कुफ़्र तो उस की अपनी जान पर है।''(4)

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عقبه بن عامر جهنی، الحدیث:۱۷۳۱۳، ج۶، ص۱۲۲.

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی الرجاء من الله، الحدیث:۱۰۵۰، ج۲، ص۲۰.

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:۳۷۱۸، ج۴، ص۸۴.

4 ......الترغیب و الترهیب، کتاب القضاء، باب الترهیب من الظلم......الخ، الحدیث: ۳۴۱۵، ج۳، ص۱۴۲، بتغیرِ قلیل.

www.dawateislami.net

﴾128﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ज़ुल्म बरोज़े क़ियामत अन्धेरा होगा।"(1)

﴾129﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम मैं ज़ालिम से ज़रूर बदला लूंगा जल्द या ताख़ीर से और उस से भी ज़रूर इन्तिक़ाम लूंगा जिस ने मज़लूम को देखा लेकिन बा वुजूदे क़ुदरत उस की मदद न की।"(2)

मुसलमान भाई की जाइज़ सिफ़ारिश करने की फ़ज़ीलत

﴾130﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब कोई ह़ाजत मन्द आए तो उस की सिफ़ारिश किया करो ताकि तुम्हें अज्र मिले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहे अपने नबी की ज़बान से फ़ैसला जारी करवाए।"(3)

﴾131﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से अफ़ज़ल सदक़ा

1 .....صحیح المسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، الحدیث: ۲۵۷۸، ص ۱۳۹٤.

2 .....المعجم الاوسط، الحدیث: ۳٦، ج ۱، ص ۲۰.

3 .....صحیح البخاری، کتاب الزکوٰة، باب التحریض علی الصدقة والشفاعة فیها، الحدیث: ۱٤۳۲، ج ۱، ص ٤۸۳.

www.dawateislami.net

ज़बान का सदक़ा है ।" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़बान का सदक़ा क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी वोह सिफ़ारिश जिस से किसी क़ैदी को रिहाई दिला दो, किसी की जान बचा लो और कोई भलाई अपने भाई की त़रफ़ बढ़ा दो और उस से कोई मुसीबत दूर कर दो ।"(1)

﴿132﴾.....उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने मुसलमान भाई के किसी नेकी के काम में या किसी मुश्किल को आसान करने में बादशाह के हां वासित़ा बने तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पुल सिरात़ को पार करने में कि जिस दिन क़दम डगमगा रहे होंगे उस की मदद फ़रमाएगा ।"(2)

﴿133﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ज़ालिम ह़ाकिम के सामने ह़क़ बात कहना बहुत बड़ा जिहाद है ।"(3)

❁❁❁❁❁❁

---

1 .....شعب الایمان،باب فی تعاون علی البر والتقوی،الحدیث:۷۶۸۳۔۷۶۸۳، ج٦،ص١٢٤.

2 .....المعجم الاوسط،الحدیث:۳۵۷۷،ج۲،ص۳۷٤.

3 .....سنن الترمذی،کتاب الفتن،باب ماجاء افضل الجهاد،الحدیث:۲۱۸۱،ج٤، ص۷۲،کلمة حق بدله عدل.

www.dawateislami.net

मुसलमान की इज़्ज़त का तहफ़्फ़ुज़ और इस की मदद करने की फ़ज़ीलत

﴿134﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो भी अपने मुसलमान भाई की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की जहन्नम की आग से हिफ़ाज़त फ़रमाएगा।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾

(پ۲۱،الروم:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना।* (1)

﴿135﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने भाई की मदद करने की ताक़त रखता हो और ग़ैर मौजूदगी में उस की मदद करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा।" (2)

﴿136﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस की मदद करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व

1 .....مشکوۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الشفقۃ والرحمۃ علی الخلق، الحدیث: ۴۹۸۲، ج۲، ص۲۱۵.

2 .....البحر الزخار المعروف بمسند البزار، مسند عمران بن حصین، الحدیث: ۳۵۴۲، ج۹، ص۳۱.

www.dawateislami.net

आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा ।"(1)

﴾137﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और हज़रते सय्यिदुना अबू त़लहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करना छोड़ देता है जहां उस की बे इ़ज़्ज़ती हो रही हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स की मदद भी ऐसी जगह नहीं फ़रमाता जहां वोह मदद का त़लबगार होता है और जो किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करता है जहां उस की बे इ़ज़्ज़ती हो रही हो और उस की आबरू रेज़ी की जा रही हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस (मददगार) की ऐसी जगह मदद फ़रमाता है जहां वोह मदद का त़लबगार होता है ।"(2)

﴾138﴿.....हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने किसी मुसलमान (की इ़ज़्ज़त) को उस मुनाफ़िक़ से बचाया जो पीठ पीछे उस की बुराई कर रहा था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (बरोज़े क़ियामत) उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो उसे जहन्नम की आग से बचाएगा और जिस ने किसी मुसलमान को ज़लीलो रुस्वा करने के लिये कोई बात की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम के पुल पर रोके रखेगा यहां तक कि अपनी कही हुई बात से निकले (या'नी उस पर कोई दलील ले आए) ।"(3)

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی التعاون علی البر و التقوی، الحدیث:٧٦٣٧، ج٦، ص١١١.

2 ......سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب من ردعن مسلم غیبة، الحدیث:٤٨٨٤، ج٤، ص٣٥٥.

3 ......المعجم الکبیر، الحدیث:٤٣٣، ج٢٠، ص١٩٤.

www.dawateislami.net

लोगों से महब्बत करने की फ़ज़ीलत

﴾139﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ईमान के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल लोगों से महब्बत करना है।''(1)

﴾140﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मियाना रवी से ख़र्च करना निस्फ़ मई़शत, लोगों से महब्बत करना निस्फ़ अ़क़्ल और अच्छा सुवाल करना आधा इ़ल्म है।''(2)

﴾141﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''लोगों से ख़ुश अख़्लाक़ी से मिलना सदक़ा है।''(3)

राहे ख़ुदा के लश्करों की मदद करने की फ़ज़ीलत

﴾142﴿.....हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ''जिस ने मुजाहिद को सामान वग़ैरा मुहय्या किया उस का अज्र भी मुजाहिद की त़रह़ है और जिस ने मुजाहिद के घर वालों की देख भाल की उस का अज्र भी मुजाहिद की मिस्ल है।''(4)

---

1 ......جامع الاحادیث للسیوطی،حرف الھمزہ مع الفاء،الحدیث:۳۴۹۵،ج۲،ص۱۳.

2 ......شعب الایمان للبیھقی،باب فی الاقتصادفی النفقة......الخ،الحدیث:۶۵۶۸، ج۵،ص۲۵۴.

3 ......شرح صحیح البخاری لابن بطال،کتاب الادب،باب المدارة مع الناس،ج۹،ص۳۰۵.

4 ......صحیح ابن حبان،کتاب السیر،باب فضل الجھاد،فصل ذکر البیان بان قولہ فقدغزا......الخ،الحدیث:۴۶۱۳،ج۷،ص۷۱.

www.dawateislami.net

﴾143﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुजाहिद को जिहाद में जाने के लिये ज़ादे राह मुहय्या किया तो बेशक उस ने (ख़ुद) जिहाद किया और जिस ने मुजाहिद के घर वालों की अच्छी त़रह़ देख भाल की तो उसे भी जिहाद करने वाले की मिस्ल सवाब मिलेगा।"(1)

ह़ाजी की मदद करने और रोज़ा इफ़्त़ार कराने की फ़ज़ीलत

﴾144﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने रोज़ा इफ़्त़ार करवाया, मुजाहिद को जिहाद में जाने के लिये ज़ादे राह मुहय्या किया तो उसे भी (रोज़े और जिहाद का) सवाब मिलेगा और उन के अज्र में भी कमी वाक़ेअ़ न होगी।"(2)

﴾145﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक ह़ज के सबब तीन लोगों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा : (1) मय्यित (2) उस की त़रफ़ से ह़ज करने वाला और (3) वसिय्यत पूरी करने वाला।"(3)

1 .....صحیح المسلم، کتاب الامارہ، باب فضل اعانة الغازی.....الخ، الحدیث: ۱۸۹۵، ص ۱۰۵۰.

2 .....المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الجهاد، باب ماذکر فی فضل الجهاد.....الخ، الحدیث: ۲۵۱، ج ٤، ص ۵۹۹.

3 .....السنن الکبری للبیهقی، کتاب الحج، باب النیابة فی الحج.....الخ، الحدیث: ۹۸۵۵، ج ۵، ص ۲۹۳.

www.dawateislami.net

﴾146﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो ह़लाल कमाई से किसी रोज़ेदार को इफ़्त़ार करवाए तो मलाइका पूरा रमज़ान उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते रहते हैं और शबे क़द्र में ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام उस से मुसाफ़ह़ा फ़रमाएंगे और जिस शख़्स से ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام मुसाफ़ह़ा फ़रमाते हैं उस का दिल नर्म और आंसू कसीर हो जाते हैं।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर किसी के पास इतना न हो तो ?" इरशाद फ़रमाया : "चाहे एक लुक़्मा या रोटी का टुकड़ा ही हो।" एक और शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर किसी के पास इतना भी न हो तो ?" इरशाद फ़रमाया : "चाहे दूध की लस्सी ही हो।" एक और शख़्स ने अ़र्ज़ की : अगर इतना भी न हो तो ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पानी के एक घूंट से ही इफ़्त़ार करवा दे (तब भी येह सवाब पाएगा)।"

छोटों पर शफ़्क़त, बड़ों की इ़ज़्ज़त और उ़लमा का एह़तिराम करने की फ़ज़ीलत

﴾147﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "जो हमारे बड़ों की इ़ज़्ज़त, हमारे छोटों पर शफ़्क़त न करे और हमारे उ़लमा का ह़क़ न पहचाने (या'नी उन का एह़तिराम न करे)

www.dawateislami.net

वोह मेरी उम्मत में से नहीं।"(1)

《148》.....हज़रते सय्यिदुना सबाह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने दादा से रिवायत करते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सफ़ेद बालों वाले मुसलमान और ह़ामिले कुरआन (आ़लिम व ह़ाफ़िज़) जो कुरआन में ज़ियादती करे न उस से ए'राज़ करे उन की ता'ज़ीम करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम करना ही है।"(2)

《149》....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रोबर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस नौजवान ने किसी बुढ्ढे का उस की उ़म्र की वजह से इकराम किया तो उस के बदले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी के ज़रीए उस की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाएगा।"(3)

उ़लमा के लिये मजलिस कुशादा करने की फ़ज़ीलत

《150》.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम अपनी मजालिस को आ़लिम के इ़ल्म, बुढ्ढे की उ़म्र और सुल्त़ान के ओ़ह्दे की

(1) ......المسند للامام احمدبن حنبل، حديث عباده بن صامت، الحديث:٢٢٨١٩، ج٨، ص٤١٢.

(2) ......سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی تنزيل الناس منازلهم، الحديث:٤٨٤٣، ج٤، ص٣٤٤.

(3) ......سنن الترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی اجلال الکبير، الحديث:٢٠٢٩، ج٣، ص٤١١.

www.dawateislami.net

वजह से कुशादा कर दिया करो।"(1)

मुसलमान भाई को तक्या पेश करने की फ़ज़ीलत

﴾151﴿.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास हाज़िर हुवे। उस वक़्त अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तक्ये पर टेक लगाए बैठे थे। आप ने वोह तक्या हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे दिया तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाहु अकबर** ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सच फ़रमाया।" अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! हमें भी बताओ कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या फ़रमाया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक्ये से टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह तक्या मुझे अ़ता फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया : "कोई मुसलमान अपने भाई के पास जाए और वोह उस की तकरीम करते हुवे अपना तक्या उसे दे दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।"(2)

﴾152﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल

---

1 .....کنز العمال، کتاب الصحبه من قسم الاقوال، باب الایمان، الحدیث: ۲۵۴۹۵، ج۹، ص۶۶.

2 .....المستدرك للحاكم، كتاب معرفة الصحابة، باب تكريم المسلم بالقاء.....الخ، الحدیث: ۶۶۰۱، ج۴، ص۷۸۳.

www.dawateislami.net

ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन चीज़ें वापस न की जाएं ख़ुश्बू, तक्या और दूध ।"(1)

खाना खिलाने की फ़ज़ीलत

﴾153﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا तशरीफ़ लाए तो लोग जल्दी से आप की त़रफ़ लपके, मैं भी आया ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार करूं। जब मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को देखा तो देखते ही पहचान गया कि येह किसी झूटे का चेहरा नहीं है। सब से पहली बात जो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी वोह येह है कि "खाना खिलाओ और सलाम आ़म करो और अपने रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करो और जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।"(2)

﴾154﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "अफ़्ज़ल आ'माल कौन से हैं ?" हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना । उस की तस्दीक़ करना । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना और मक़्बूल ह़ज ।"

1 ......سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی کراھۃ ردالطیب، الحدیث:۲۷۹۹، ج۴، ص۳۶۲.

2 ......سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۴۲، الحدیث:۲۴۹۳، ج۴، ص۲۱۹.

www.dawateislami.net

जब वोह जाने लगा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे बुला कर इरशाद फ़रमाया : "इन से ज़ियादा आसान खाना खिलाना और नर्मी से गुफ़्तगू करना है।"(1)

﴾155﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "इस्लाम क्या है ?" तो ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "खाना खिलाना और नर्मी से गुफ़्तगू करना।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ईमान क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "सब्र करना और सख़ावत करना।"(2)

﴾156﴿.....हज़रते सय्यिदुना सुहैब बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "तुम में बेहतर वोह है जो खाना खिलाता है।"(3)

﴾157﴿.....हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मग़्फ़िरत के अस्बाब में से एक सबब भूके मुसलमान को खाना खिलाना है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

---

(1)......مجمع الزوائد، کتاب الایمان، با ب ای العمل افضل......الخ، الحدیث:۲۰۲ـ۲۰۱، ج۱، ص۲۲۵ـ۲۲۴.

(2)......مجمع الزوائد، کتاب الایمان، با ب ای العمل......الخ، الحدیث:۲۱۰، ج۱، ص۲۲۷.

(3)......المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث صھیب بن سنان، الحدیث:۲۳۹۸۱، ج۹، ص۲۴۰.

www.dawateislami.net

اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ﴿۱۴﴾ (پ ۳۰، البلد: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : या भूक के दिन खाना देना । **(1)**

﴾**158**﴿.....हज़रते सय्यिदुना शरीह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मग़फ़िरत के अस्बाब में से खाना खिलाना और सलाम को आ़म करना भी हैं ।"**(2)**

﴾**159**﴿.....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने अपने मुसलमान भाई को खाना खिलाया यहां तक कि वोह सैर हो गया और पानी पिलाया यहां तक कि वोह सैराब हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ खिलाने वाले को जहन्नम से सात ख़न्दक़ों की मसाफ़त दूर कर देगा । हर दो ख़न्दक़ों के दरमियान **100** साल की मसाफ़त है ।"**(3)**

﴾**160**﴿.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तक बन्दे का दस्तर ख़्वान बिछा रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं ।"**(4)**

---

1 ......المستدرك للحاكم، كتاب التفسير، باب اطعام المسلم السغبان......الخ، الحديث: ۳۹۹۹، ج۳، ص۳۷۲.

2 ......المعجم الكبير، الحديث: ۴۶۹، ج۲۲، ص۱۸۰.

3 ......شعب الايمان للبيهقي، باب في الزكوٰة، فصل في الطعام و سقي الماء، الحديث: ۳۳۶۸، ج۳، ص۲۱۷.

4 ......المعجم الاوسط، الحديث: ۴۷۲۹، ج۳، ص۳۲۴.

www.dawateislami.net

﴾161﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा पसन्द वोह खाना है जिसे खाने वाले ज़ियादा हों।"(1)

﴾162﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस घर में मेहमान हों भलाई उस घर की त़रफ़ कोहान में छुरी चलने से भी ज़ियादा तेज़ पहुंचती है।"(2)

﴾163﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने मुसलमान भाई की भूक को मिटाने का एहतिमाम करे और उसे खाना खिलाए यहां तक कि वोह सैर हो जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।"(3)

﴾164﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो भूके को खाना खिलाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा।"(4)

---

1 .....المسند لابی یعلی الموصلی، مسند جابر بن عبداللّٰہ، الحدیث: ۲۰۴۱، ج۲، ص۲۸۸.

2 .....سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الضیافة، الحدیث: ۳۳۵۶، ج۴، ص۵۱.

3 .....المسند لابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالك، الحدیث: ۳۴۰۷، ج۳، ص۲۱۴.

4 .....تمهید الفرش فی الخصال موجبة لظل العرش للسیوطی، ذکر السبعتین اللتین..... الخ، ص۸.

www.dawateislami.net

﴾165﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भूके जिगर को ठन्डा करने वाले (या'नी उसे खाना खिलाने वाले) से महब्बत फ़रमाता है।"(1)

﴾166﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने अपने मुसलमान भाई को कोई मीठी चीज़ खिलाई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से महशर की सख़्तियां दूर फ़रमा देगा।"(2)

﴾167﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक जन्नत में बाला ख़ाने हैं जिन का अन्दरूनी मन्ज़र बाहर से और बैरूनी मन्ज़र अन्दर से नज़र आता है।" सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह किस के लिये हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "येह उस के लिये हैं जो अच्छी गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए और रात को जब लोग सो रहे हों तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ियाम करे।"(3)

﴾168﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : "ह़ज की (मानिन्द) कौन सी

1 .....الكنى والاسماء لدولابى،باب من كنيت ابويحيى،الحديث:٢٠٨١،ج٣، ص١١٨٨،برد بدله يشبع،

2 .....الفردوس بماثورالخطاب،باب الميم،الحديث:٦٠٥٠،ج٢،ص٢٨١.

3 .....المستدرك للحاكم،كتاب صلاة التطوع،باب صلاة الحاجة،الحديث:١٢٤٠، ج١،ص٦٣١.

www.dawateislami.net

नेकी है ?'' तो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''खाना खिलाना और नर्मी से गुफ़्तगू करना।''(1)

﴿169﴾.....हज़रते सय्यिदुना बुदैल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''बेशक मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने भाई को एक लुक़्मा खिलाना दस दिरहम सदक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है और दस दिरहम सदक़ा करना मुझे ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है।''(2)

﴿170﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा : ''ऐ इब्ने आदम ! मैं बीमार था तू ने मेरी इयादत क्यूं न की ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी इयादत कैसे करता हालांकि तू तो रब्बुल आलमीन है ?'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''क्या तुझे इल्म न था कि मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार है फिर भी तू ने उस की इयादत न की अगर तू उस की इयादत करता तो ज़रूर मुझे उस के पास पाता।'' फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : ''ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से खाना मांगा तू ने मुझे खाना क्यूं न खिलाया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा : ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे कैसे खाना खिलाता ? तू तो तमाम जहानों को पालने वाला है।''

---

1 .....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الحج، باب فضل الحج والعمره، الحديث: ١٠٣٩٠، ج٥، ص٤٣٠، لين الكلام بدله طيب الكلام.

2 .....شعب الايمان للبيهقي، باب في اكرام الضيف، فصل في التكلف للضيف، الحديث: ٩٦٢٧، ج٧، ص١٠٠.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "क्या मेरे फुलां बन्दे ने तुझ से खाना न मांगा था लेकिन तू ने उसे न खिलाया क्या तू न जानता था कि अगर तू उसे खाना खिला देता तो उस का अज्र मेरे पास पाता।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से पानी मांगा तू ने मुझे पानी क्यूं न पिलाया।" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे कैसे पानी पिलाता तू तो रब्बुल आ़लमीन है।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "क्या मेरे फुलां बन्दे ने तुझ से पानी न मांगा था लेकिन तू ने उसे न पिलाया। अगर तू उसे पानी पिला देता तो ज़रूर उस का अज्र मेरे पास पाता।"(1)

﴿171﴾.....अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरा अपने दोस्तों को एक साअ़ खाने पर जम्अ़ करना मुझे इस से ज़ियादा महबूब है कि मैं बाज़ार जाऊं और एक लौंडी ख़रीद कर आज़ाद कर दूं।"(2)

﴿172﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने उन के पास पैग़ाम भेजा कि "हम ने आप के लिये लज़ीज़ खाना और ख़ुश्बू तय्यार की है। आप अपने हम पल्ला लोग देखें और उन्हें साथ ले कर हमारे पास तशरीफ़ ले आएं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में गए और वहां जो मसाकीन व साइलीन थे उन्हें ले कर घर तशरीफ़ ले गए। हम साया ख़वातीन भी आप की ज़ौजा के पास आ गईं और कहने

---

1 .....صحيح المسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب فضل عيادة المريض، الحديث: ٢٥٦٩، ص١٣٨٩.

2 .....كنز العمال، كتاب الضيافه من قسم الافعال، الحديث: ٢٥٩٦٧، ج٥، جز٩، ص١١٨.

www.dawateislami.net

लगीं : "ख़ुदा की क़सम तुम्हारे घर तो मसाकीन जम्अ़ हो गए।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ौजा के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "मैं तुम्हें अपने उस ह़क़ की क़सम देता हूं जो मेरा तुम पर है कि तुम खाना और ख़ुश्बू बचा कर नहीं रखोगी।" फिर उन्हों ने ऐसे ही किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले मसाकीन को खाना खिलाया फिर उन्हें कपड़े पहनाए और ख़ुश्बू लगाई।

﴿173﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अबू ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا सुवारी पर सुवार मसाकीन के पास से गुज़रे जो बचे खुचे टुकड़े खा रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें सलाम किया। मसाकीन ने आप को खाने की दा'वत दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ (پ۲۰، القصص:۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद।*

फिर सुवारी से उतर आए और उन के साथ खाना खाया। इस के बा'द इरशाद फ़रमाया : "मैं ने तुम्हारी दा'वत क़बूल की। अब तुम मेरी दा'वत क़बूल करो।" फिर उन्हें अपने घर ले गए और खाना खिलाया और कपड़े और दराहिम अ़त़ा फ़रमाए।"[1]

﴿174﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का दस्तर ख़्वान कुशादा और गुफ़्तगू अच्छी होती थी।"

1 .....تفسیر قرطبی، سورۃ القصص، تحت الآیۃ:۸۳، ج۷، ص۲۴۰.

www.dawateislami.net

﴾175﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र क़रशी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज्जाज के लिये मिस्री का एक बहुत बड़ा टुकड़ा बनाया गया जिसे लोग चौपायों पर भी न लाद सकते थे। फिर उसे एक छकड़े से खींच कर ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक के पास लाया गया। वोह अपने घर से बाहर निकला और उस के ह़ज्म को देख कर उस की हैअत का अन्दाज़ा लगाया। मगर उसे न समझ आया कि इस का क्या किया जाए? चन्द लम्ह़ात सोच कर अपने ग़ुलाम को आवाज़ दी और कहा : "इसे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ले जाओ।" उन दिनों आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा के पास ही ठहरे हुवे थे। जब मिस्री का इतना बड़ा टुकड़ा उन के पास लाया गया तो वोह बड़े मुतअ़ज्जिब हुवे और लोग उसे देखने के लिये जम्अ़ हो गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "येह क्या है?" अ़र्ज़ की गई : "येह मिस्री का टुकड़ा है जो ख़लीफ़ा ने आप के लिये भेजा है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाहर निकल कर एक ऐसी चीज़ देखी जिस की मिस्ल लोगों ने पहले न देखी थी कुछ देर ग़ौरो फ़िक्र करने के बा'द ग़ुलाम से फ़रमाया : "चमड़े के बिछौने और कुल्हाड़ियां ले आओ।" चुनान्चे, उसे तोड़ने के लिये कुल्हाड़ियां लाई गईं और साथ ही चमड़े के बिछौने भी पेश कर दिये गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जिस के हाथ जो आए वोह उसी का है।" फिर आप वहीं खड़े रहे यहां तक कि वोह टुकड़ा तमाम का तमाम तोड़ लिया गया। जब येह ख़बर ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक को पहुंची तो वोह बड़ा मुतअ़ज्जिब हुवा और कहने लगा : "वोह इस मुआ़मले में हम सब से ज़ियादा जानने वाले हैं।"

www.dawateislami.net

﴾176﴿.....हज़रते सय्यिदुना उ़रवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिला तो एक ए'लान करने वाला लोगों के दरमियान ए'लान कर रहा था कि "जो कोई गोश्त व चर्बी खाना चाहे वोह सा'द बिन उ़बादा के घर आ जाए।" आप फ़रमाते हैं : फिर मेरी मुलाक़ात उन के बेटे क़ैस से हुई तो वोह भी येही ए'लान कर रहे थे। हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे कामिल ता'रीफ़ करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। मुझे बुज़ुर्गी अ़ता फ़रमा और बुज़ुर्गी तो नेक आ'माल में है और नेक आ'माल से माल मुमकिन हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़लील माल मुझे किफ़ायत नहीं कर सकता और मैं भी इस पर तक्या नहीं कर सकता।"(1)

﴾177﴿.....हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रोज़ा रखा करते और हज़रते सय्यिदतुना सफ़िया बिन्ते उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन की इफ़्तारी के लिये कुछ बना दिया करती थीं। एक दिन इन के पास उ़म्दा क़िस्म का अनार लाया गया तो दरवाज़े पर एक साइल ने सुवाल किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह उसे दे दो।" लेकिन हज़रते सय्यिदतुना सफ़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : "उस के लिये इस से बेहतर है।" फिर हज़रते सय्यिदतुना सफ़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुझ से कहा कि "उसे फ़ुलां चीज़ दे दो।" फिर जब वोह अनार हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के सामने पेश किया गया तो उन्हों ने फ़रमाया : "इसे उठाओ और किसी दूसरे साइल को दे दो क्यूंकि मैं इसे सदक़ा करने की निय्यत कर चुका हूं।"

---

1 ......المصنف لابن ابی شیبه، کتاب الادب، باب ماذکرفی الشح، الحدیث:۱۴ـ۱۳، ج۶، ص۲۵۴.

www.dawateislami.net

﴾178﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बीमार हुवे तो मैं ने उन के लिये एक दिरहम के अंगूर ख़रीदे । जब वोह अंगूर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने पेश किये तो एक साइल ने आ कर सुवाल किया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह उसे दे दो ।" (मैं ने दे दिये) फिर मैं ने उस साइल के पीछे किसी को भेजा कि साइल से येह अंगूर इस त़रह़ ख़रीदे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को पता न चले । जब अंगूर दोबारा आप की ख़िदमत में पेश किये गए तो वोह साइल फिर आ गया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर फ़रमाया : "येह उसे दे दो ।" तीन मरतबा इसी त़रह़ हुवा और हर मरतबा साइल से अंगूर ख़रीद कर आप को पेश किये गए लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हर बार अंगूर आने वाले साइल को देने का हुक्म फ़रमाया ह़त्ता कि लोगों ने साइल को इस त़रह़ रोका कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को ख़बर न हुई ।(1)

﴾179﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने अपने ह़वारियों में से कुछ लोगों को बुलाया, उन्हें खाना खिलाया और फिर खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : "इ़बादत गुज़ारों के साथ ऐसा ही सुलूक किया करो ।"(2)

---

1 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی الزکاۃ،فصل فیما جاء فی الایثار،الحدیث: ۳٤۸۱، ج۳،ص۲۵۹،بتغیرٍ قلیلٍ.

2 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی اکرام الضیف،فصل فی التکلف للضیف..... الخ، الحدیث:۹٦۳۸،ج۷،ص۱۰۲.

www.dawateislami.net

﴾180﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू क़ुबैसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा खजूर के ह़ल्वे की टोकरी अपने तख़्त के नीचे रखा करते थे। जब उन के पास क़ुर्रा (या'नी क़ुरआन पढ़ने वाले) आते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह ह़ल्वा उन्हें खिलाया करते।(1)

﴾181﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने औ़न رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "हम जब भी हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सिरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के पास जाते तो वोह हमें खजूर का ह़ल्वा और फ़ालूदा खिलाया करते थे।"(2)

﴾182﴿.....हज़रते सय्यिदुना अबू ख़ुलदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सिरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के पास गए तो उन्हों ने फ़रमाया : "मुझे समझ नहीं आ रही कि तुम्हें क्या चीज़ पेश करूं ? गोश्त और रोटी तो तुम सब के घर में है।" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी लौंडी को आवाज़ दी और शहद लाने का कहा और फिर ख़ुद शहद हमें खाने के लिये डाल कर देते।(3)

﴾183﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अबी अ़बला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि हम बैतुल मुक़द्दस के '**बाबुल अस्बात़**' में हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास ह़ाज़िर हुवा करते तो वोह हमें ह़दीस बयान फ़रमातीं। जब हम उन के पास से उठने का इरादा करते तो वोह हमारे लिये ह़ल्वा और दीगर खाने की चीज़ें मंगवा लिया करतीं।"

---

1 ......حلية الاولياء،الرقم٢٥٤ خيثمه بن عبدالرحمن،الحديث:٤٩٧٤،ج٤،ص١٢١.
2 ......حلية الاولياء،الرقم١٩٣ ابن سرين،الحديث:٢٣٢١،ج٢،ص٣٠٥.
3 ......حلية الاولياء،الرقم١٩٣ ابن سرين،الحديث:٢٣٢٣،ج٢،ص٣٠٥.

www.dawateislami.net

﴾184﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम्हारे सामने मीठी चीज़ पेश की जाए तो उस में से ज़रूर कुछ ले लो और जब तुम्हें ख़ुश्बू पेश की जाए तो उस में से भी ज़रूर कुछ लगा लिया करो।"(1)

﴾185﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम जमह़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि एक आ'राबी (दीहात का रहने वाला) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में दाख़िल हुवा। आप के घर के एक जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़तवा दिया करते। इन से जो भी सुवाल किया जाता उस का जवाब देते और दूसरी जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हर आने वाले को खाना खिलाते। येह देख कर उस आ'राबी ने कहा : "जो दुन्या और आख़िरत की भलाई चाहता है वोह अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब के घर ज़रूर आए क्यूंकि येह फ़तवा देते, लोगों को फ़िक़्ह सिखाते और खाना भी खिलाते हैं।"(2)

﴾186﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا क़ुरबान गाह में जानवर ज़ब्ह़ करवा कर वहीं लोगों में तक़्सीम फ़रमा दिया करते थे। इसी वजह से मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के बाज़ार में वोह जगह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की क़ुरबान गाह के नाम से मश्हूर हो गई।(3)

---

1 .....مجمع الزوائد، کتاب الاطعمه، باب فی الحلوی، الحدیث: ۷۹۹۱، ج۵، ص ٤٦، بتغیرٍ قلیلٍ.

2 .....تاریخ مدینه دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٤٥٦ عبیداللّٰه بن عباس، ج۳۷، ص ٤٨٠.

3 .....تاریخ مدینه دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٤٥٦ عبیداللّٰه بن عباس، ج۳۷، ص ٤٧٢.

www.dawateislami.net

﴾187﴿....हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुहम्मद मदाइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के लिये हर रोज़ एक ऊंट या इस के गोश्त के बराबर बकरियों को ज़ब्ह़ किया जाता था।"(1)

﴾188﴿.....हज़रते सय्यिदुना अब्बान बिन उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को रुस्वा करने का इरादा किया और लोगों के सामने जा कर कहने लगा कि "उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास ने तुम्हें बुलाया है कि आज दो पहर का खाना मेरे पास खाओ।" येह सुन कर लोग जूक़ दर जूक़ आना शुरूअ़ हो गए यहां तक कि आप का घर भर गया। हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "लोगों को क्या हो गया है?" अ़र्ज़ की गई : "हुज़ूर! आप का भेजा हुवा शख़्स आया था (उस ने इस त़रह़ कहा है)।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सारा माजरा समझ गए और इरशाद फ़रमाया : "दरवाज़ा बन्द कर दो।" फिर अपने ख़ुद्दाम से कहा कि "बाज़ार से सारे फल ले आओ।" (जब वोह फल ले आए तो) लोगों ने फल शहद से मिला कर खाए। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दोबारा अपने चन्द ख़ुद्दाम से कहा कि "भुना हुवा गोश्त और रोटियां ले आओ।" ख़ुद्दाम रोटियां ले आए तो लोगों को पेश कर दी गईं। जब लोग खाने से फ़ारिग़ हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "क्या हम ने जिस चीज़ का इरादा (या'नी जो ए'लान) किया था उसे पूरा कर दिया?" तो लोगों ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि अगर और

(1)......تاریخ مدینه دمشق لابن عساکر، الرقم٤٤٥٦ عبیداللّٰه بن عباس، ج٣٧، ص٤٨١، بدون اومثل ذلك من الجزورمن الغنم.

www.dawateislami.net

लोग भी आ जाएं तो हमें परवाह नहीं।"(1)

﴾189﴿.....हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक शख़्स को हज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ आ़रिय्यतन हांडी लेने के लिये भेजा तो हज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "हांडी को भर दो।" फिर उसे हज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ भेज दिया। हज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उसे वापस लौटा दिया और फ़रमाया : "मैं ने तो ख़ाली हांडी मांगी थी।" हज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह कह कर हांडी दोबारा भेज दी कि "हम ख़ाली बरतन नहीं देते।"(2)

﴾190﴿.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि "तीन लोग ऐसे हैं जिन की बराबरी करने की मुझ में त़ाक़त नहीं और चौथा वोह शख़्स है कि जिस की किफ़ायत मुझ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही करवा सकता है। वोह तीन लोग जिन की मैं बराबरी करने की त़ाक़त नहीं रखता : एक वोह शख़्स जो अपनी मजलिस में मेरे लिये जगह कुशादा करे। दूसरा वोह जो शदीद प्यास में मुझे पानी पिलाए। तीसरा वोह जिस के क़दम मेरे दरवाज़े पर आने जाने में गुबार आलूद हों और चौथा शख़्स जिस की मदद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही मुझ से करवा सकता है वोह है जिसे कोई ह़ाजत लाह़िक़ हो और वोह सारी रात इस फ़िक्र में जाग कर गुज़ार दे कि मेरी ह़ाजत कौन पूरी करेगा जब सुब्ह़ हो तो मुझे ह़ाजत पूरी करने

1 ......تاریخ مدینه دمشق لابن عساکر،الرقم٤٤٥٦عبیداللّٰه بن عباس،ج٣٧،ص٤٧٢.

2 ......اسدالغابة فی معرفة الصحابة لابن اثیر،الرقم٣٦٠٤عدی بن حاتم،ج٤ص١٢.

www.dawateislami.net

वाला पाए येही वोह शख़्स है कि जिस की मदद मुझ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही करवा सकता है और मुझे इस बात से ह़या आती है कि कोई (अपनी ह़ाजत के लिये) तीन मरतबा मेरे घर तक चल कर आए और मैं उस की मदद न करूं।''

मुसलमान भाई को लिबास पहनाने की फ़ज़ीलत

﴾191﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दिन सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की मौजूदगी में अपनी नई क़मीस मंगवा कर उसे ज़ैबे तन फ़रमाया। मेरा गुमान है कि उन्हों ने क़मीस पहनने से पहले येह दुआ़ पढ़ी : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِہٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِہٖ فِیْ حَیَاتِیْ ''या'नी : तमाम ता'रीफ़ें उस ख़ुदा के लिये जिस ने मुझे पहनाया और मेरे सित्र को ढांपा और इस से मैं अपनी ज़िन्दगी में ज़ीनत ह़ासिल करता हूं।'' फिर फ़रमाया : मैं ने दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नया लिबास ज़ैबे तन फ़रमाया और येही दुआ़ पढ़ी जो मैं ने पढ़ी। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जो भी मुसलमान नया लिबास पहने और येह दुआ़ पढ़े फिर अपना पुराना लिबास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किसी मुसलमान मिस्कीन फ़क़ीर को दे दे तो जब तक उस पर कपड़े का एक धागा भी बाक़ी रहेगा वोह बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह व अमान और क़ुर्ब में रहेगा चाहे येह (देने वाला) ज़िन्दा हो या मर जाए।''(1)

1 .....کتاب الدعاء لطبرانی،باب القول عندلبس الثیاب،الحدیث:۳۹۳،ص۱۴۲.

www.dawateislami.net

﴾192﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो भूके मिस्कीन को खाना खिलाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नती खाना खिलाएगा। जो प्यासे को पानी पिलाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन मोहर लगाई हुई ख़ालिस शराबे त़हूर से सैराब फ़रमाएगा और जो किसी बरह्ना को लिबास पहनाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सब्ज़ जन्नती हुल्ले पहनाएगा।"(1)

हमसाए के हुक़ूक़ का बयान

﴾193﴿.....मरवी है कि शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام मुझे हमसाए के ह़क़ के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म पहुंचाते रहे ह़त्ता कि मुझे गुमान हुवा कि अ़न क़रीब हमसाए को विरासत में ह़िस्सेदार बना देंगे।"(2)

﴾194﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बकरी ज़ब्ह़ करने का हुक्म दिया तो वोह ज़ब्ह़ कर दी गई। फिर आप ने अपने ख़ादिम से दरयाफ़्त किया कि क्या तुम ने इस में से हमारे यहूदी हमसाए को कुछ भेजा है(3) क्यूंकि मैं ने

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة، الحدیث: ۲۴۵۷، ج۴، ص۲۰۴.

2 .....صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الوصاة بالجار، الحدیث: ۶۱۰۵، ج۴، ص۱۰۴.

3 ...ज़िम्मी काफ़िर को ज़कात वग़ैरा सदक़ए वाजिबा के इ़लावा सदक़ए नाफ़िला दे सकते हैं अलबत्ता ह़र्बी काफ़िर को सदक़ए नाफ़िला भी नहीं दे सकते और इस वक़्त दुन्या में तमाम काफ़िर ह़र्बी हैं लिहाज़ा इन्हें किसी भी क़िस्म का सदक़ा नहीं दे सकते। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद अल मा'रूफ़ मुल्ला जीवन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "तफ़्सीराते अह़मदिय्या" में फ़रमाते हैं कि "आज के दौर में तमाम काफ़िर ह़र्बी हैं जिन्हें अहले इ़ल्म ही जानते हैं।" (تفسیرات احمدیه، پ۱۰، التوبه، تحت الآیه: ۲۹، ص۴۵۸) .....

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام मुझे हमसाए के हक़ के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हुक्म पहुंचाते रहे ह़त्ता कि मुझे गुमान हुवा कि अ़न क़रीब हमसाए को विरासत में ह़िस्सेदार बना देंगे।"(1)

﴾195﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ऊंटनी जदआ़ पर सुवार थे मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "मैं तुम्हें पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करता हूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात बार बार इरशाद फ़रमाई। रावी कहते हैं कि मैं ने (दिल में) कहा कि "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे वारिस बना देंगे।"(2)

﴾196﴿....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तमाम मख़्लूक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की परवर्दा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को अपनी मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा मह़बूब वोह है जो उस के परवर्दा के

.........नीज़ कुफ़्फ़ार ख़्वाह ज़िम्मी हों या ह़र्बी उन्हें क़ुरबानी का गोश्त भी नहीं दे सकते। चुनान्चे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पड़ोसी के हुक़ूक़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "काफ़िर पड़ोसी का सिर्फ़ एक हक़ है और वोह ह़क़्क़े पड़ोस है।" सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ की : "क्या हम उन्हें अपनी क़ुरबानियों में से दें ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुशरिकीन को अपनी क़ुरबानियों में से कुछ भी न दो।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی اکرام الجار،الحدیث:۹۵۶۰،ج۷،ص۸۳)

1 ......المسندللحمیدی،احادیث عبداللّٰہ بن عمروبن عاص،الحدیث:۵۹۳،ج۲،ص۲۷۰.

2 ......المعجم الکبیر،الحدیث:۷۵۲۳،ج۸،ص۱۱۱.

www.dawateislami.net

साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए।''(1)

﴾197﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शरीह़ का'बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि हमसाए से अच्छा सुलूक करे।''(2)

﴾198﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वोह अपने हमसाए को तक्लीफ़ न दे।''(3)

﴾199﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में अपने पड़ोसी की शिकायत ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अपना सामान रास्ते पर डाल दो।'' उस ने अपना सामान रास्ते में डाल दिया। लोग वहां से गुज़रते तो उस के पड़ोसी पर ला'नत भेजते। उस ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोग मेरे साथ कैसा बरताव कर रहे हैं ?'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''लोग तुम्हारे

---

1 .....المسند لابی یعلی الموصلی، الحدیث: ٣٤٦٥، ج٣، ص٢٣٢.

2 .....صحیح البخاری، کتاب الادب، با ب من کان یومن باللّٰہ.....الخ، الحدیث: ٦٠١٩، ج٤، ص١٠٥.

3 .....صحیح البخاری، کتاب الادب، با ب من کان یومن باللّٰہ.....الخ، الحدیث: ٦٠١٨، ج٤، ص١٠٥.

www.dawateislami.net

साथ कैसा बरताव कर रहे हैं?" अ़र्ज़ की : "मुझे ला'न त़ा'न कर रहे हैं।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझ पर ला'नत भेजी।" उस ने अ़र्ज़ की : "आज के बा'द मैं कभी ऐसा नहीं करूंगा।" चुनान्चे, वोह शख़्स जिस ने बारगाहे रिसालत में शिकायत की थी ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपना सामान उठा लो तुम्हारी तक्लीफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दूर फ़रमा दी है।"(1)

﴿200﴾....उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सलमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान करती हैं कि एक दिन मैं और रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिह़ाफ़ में थे कि हमसाए की बकरी घर में दाख़िल हो गई। जब उस ने रोटी उठाई तो मैं उस की त़रफ़ गई और रोटी उस के जबड़े से खींच ली येह देख कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुझे इस को तक्लीफ़ देना अमान न देगा क्यूंकि येह भी हमसाए को तक्लीफ़ देने से कुछ कम नहीं।"(2)

تمت بالخير والحمد لله رب العٰلمين

❁❁❁❁❁

1 .....الترغيب والترهيب، كتاب البر والصلة وغيرها، باب الترهيب من اذى الجار.....الخ، الحديث: ٣٩١١، ج٣، ص٢٨٧.

2 .....جامع العلوم والحكم، الحديث: الخامس عشر، ص١٧٣.

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالی	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ
ترجمۂ قرآن کنزالایمان	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ
تفیسرروح البیان	علامہ اسماعیل حقی بروسوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
تفسیرقرطبی	ابوعبداللہ محمدبن احمدانصاری قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۹ھ
تفسیرالدرالمنثور	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۰۳ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل لبخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
سنن أبي داود	امام ابوداؤدسلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجه	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجه رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ ۱۴۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
الزهد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید ۱۴۲۶ھ
المصنف	امام ابو بکرعبد الرزاق بن همام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
المصنف	امام عبداللہ بن محمدابی شیبہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مسندابی داؤدطیالسی	امام ابوداؤدسلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	دارالمعرفہ بیروت
مسندابی یعلی	شیخ الاسلام ابویعلیٰ احمدموصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
کتاب الدعاء	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
الموسوعه	ابوبکرعبداللہ بن محمد بن ابی دنیارحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابونعیم اصفهانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیهقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
السنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بیهقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
المستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ ۱۴۱۸ ھ
مشکوۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۱ھ
الترغیب و الترهیب	امام زکی الدین منذری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الفکربیروت ۱۴۱۷ھ
الادب المفرد	امام محمد بن اسماعیل لبخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	ملتان پاکستان
شرح السنه	امام أبو محمدحسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ
تاریخ دمشق	امام ابن عساکر رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۵ھ
کنزالعمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین هندی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
جامع العلوم و الحکم	ابوالفرج عبدالرحمن بن شهاب الدین رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	مکتبۃ فیصلیہ مکۃ المکرمہ

www.dawateislami.net

الاستذکار	ابوعمریوسف بن عبداللّٰہ بن عبدالبرقرطبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٤٦٣ھ	دارالکتب العلمیہ ٢٠٠٠ء
جامع الاحادیث	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٩١١ھ	دارالفکربیروت ١٤١٤ھ
الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمدعبداللّٰہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٣٦٥ھ	دارالکتب العلمیہ ١٤١٨ھ
فیض القدیر	علامہ محمدعبد الرء وف مناوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ١٠٣١ھ	دارالکتب العلمیہ ١٤٢٢ھ
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکرھیثمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٨٠٧ھ	دارالفکر بیروت ١٤٢٠ھ
معرفۃ الصحابہ	امام حافظ ابونعیم اصفہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٤٣٠ھ	دارالکتب العلمیہ ١٤٢٢ھ
شرح صحیح البخاری	ابوالحسن علی بن خلف بن عبداللّٰہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٤٤٩ھ	مکتبۃ الرشیدریاض ١٤٢٠ھ
الکنی والاسماء	ابوبشرمحمدبن احمدبن حمادالدولابی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٣١٠ھ	دارابن حزم ١٤٢١ھ
المسند	ابوبکرعبداللّٰہ بن زبیرحمیدی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٢١٩ھ	دارالکتب العلمیہ
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علامہ علاؤالدین علی بن بلبان فارسی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٧٣٩ھ	دارالکتب العلمیہ ١٤١٧ھ
فردوس الاخبار بماثور الخطاب	أبو شجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی ہمذانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٥٠٩ھ	دارالفکربیروت ١٤١٨ھ
بحرالزخارالمعروف بمسندالبزار	امام ابوبکراحمدبن عمروبن عبدالخالق بزار رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٢٩٢ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ١٤٢٤ھ
اسدالغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ	ابوالحسن علی بن محمد جزری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٦٣٠ھ	داراحیاء التراث ١٤١٧ھ
عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری	علامہ بدرالدین ابی محمدمحمودبن احمدعینی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٨٥٥ھ	دارالفکربیروت ١٤١٨ھ
تمہیدالفرش فی الخصال موجبۃ لظل العرش	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ٩١١ھ	مکتبہ مشکوۃ الاسلامیہ

ता'रीफ़ और सआ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की **ता'रीफ़ें** होती हैं और आख़िरत में **सआ़दत मन्दी** से सरफ़राज़ होगा।"

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तबलीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके **मदनी माह़ोल** में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में रिज़ाए इलाही के लिये **अच्छी अच्छी निय्यतों** के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलतिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, **गुनाहों से नफ़रत** करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-579-903-1
0101103
MC 1286

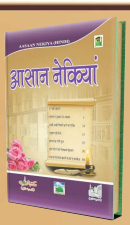

MAKTABATUL MADINA

अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात 9327168200
मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, पहला मन्ज़िला, 50 टनटन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई-400009, महाराष्ट्र 09022177997
हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तिलंगाना (040) 24572786
421, URDU MARKET, MATIA MAHAL, JAMA MASJID, DELHI - 110006 (011) 23284560
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, web : www.dawateislami.net